# चकमक

मई, 1999 बाल विज्ञान पत्रिका रु. 7.00

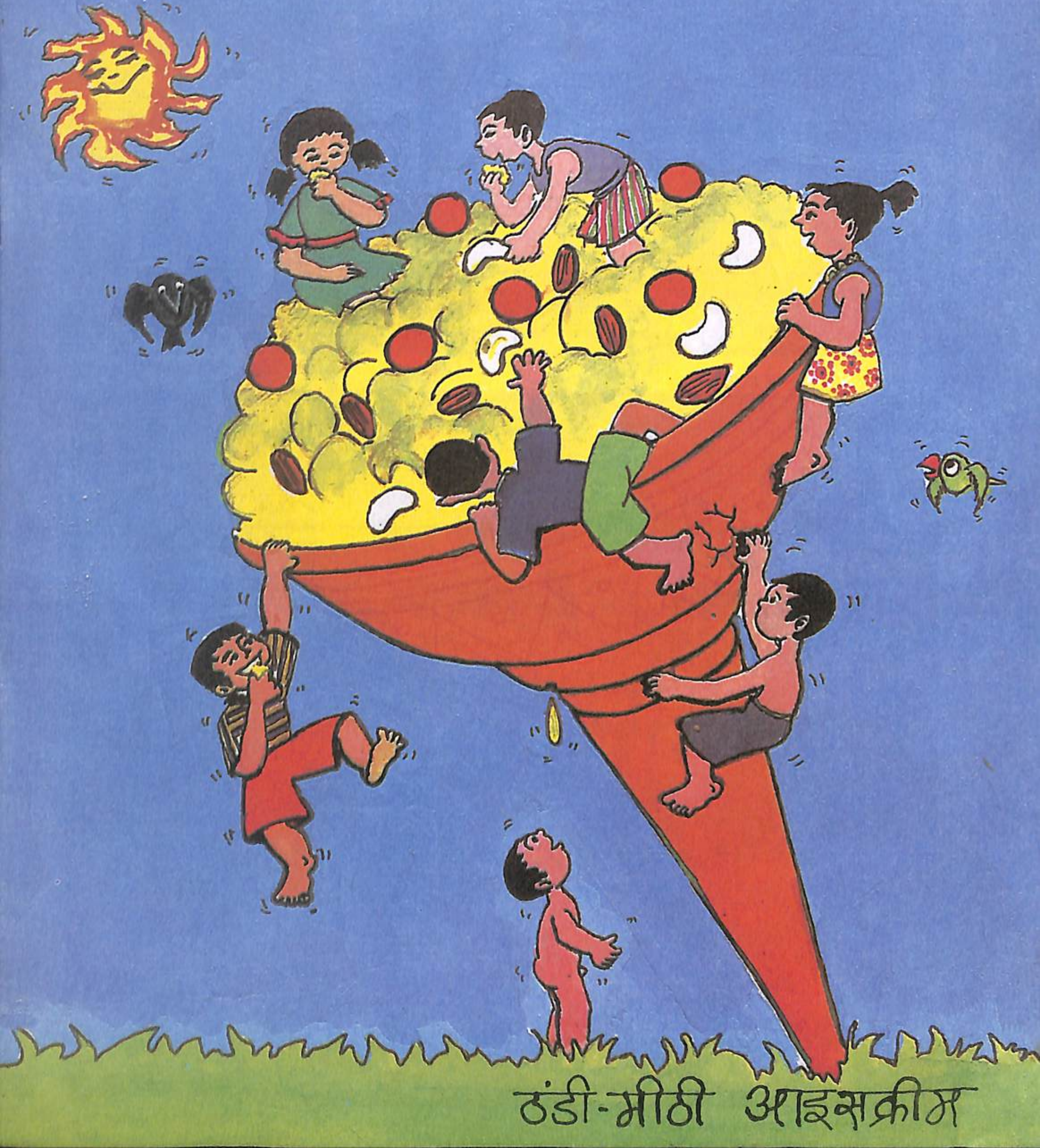

आनंद ओझा, चौथी, भावनगर, गुजरात

आमिर, चौथी, भोपाल, म.प्र.

# चकमक

मासिक बाल विज्ञान पत्रिका

वर्ष-14 अंक-10 मई, 1999

**सम्पादन**
विनोद रायना
राजेश उत्साही
कविता सुरेश
टुलटुल विस्वास

**कला सज्जा**
जया विवेक

**विज्ञान परामर्श**
सुशील जोशी

**वितरण**
कमल सिंह, मनोज निगम,
अशोक रोकड़े



**चकमक का चंदा**

एक प्रति : सात रुपए
छमाही : 40.00 रुपए
वार्षिक : 75.00 रुपए
दो साल : 140.00 रुपए
तीन साल : 200.00 रुपए
आजीवन : 1000.00 रुपए

**सभी में डाक ख़र्च हमारा**

चंदा, मनीआर्डर/ड्राफ्ट/चेक से एकलव्य के नाम पर भेजें। भोपाल से बाहर के चेक में बैंक चार्ज 15.00 रुपए अतिरिक्त जोड़ें।

कवर का काग़ज़ : यूनीसेफ के सौजन्य से



**पत्र/चंदा/रचना भेजने का पता**
**एकलव्य**
**ई-1/25**
**अरेरा कॉलोनी,**
**भोपाल - 462 016**
**(म.प्र.)**
**फोन : 563380**

स्वाति माथुर, दूसरी, उदयपुर, राजस्थान

## 164 वें अंक में . . .


*विशेष*

8 ✸ ठण्डी-मीठी आइसक्रीम

*कविताएँ*

20 ✸ सुबह
36 ✸ अपने बाबा को

*कहानी*

23 ✸ लोमड़ी की पूँछ

*हर बार की तरह*

2 ✸ इस बार की बात
29 ✸ खेल खेल में
34 ✸ माथापच्ची
22 ✸ वर्ग पहेली

मेरा पन्ना पृष्ठ 5,6,7, 31, 38 और 39 पर।

*धारावाहिक श्रृंखला*

14 ✸ हमारे शिक्षक – 8

*और यह भी*

12 ✸ आओ खेलें खेल -गाएँ गीत
32 ✸ हमारी आवाज़ – 7


आवरण चित्र : शिवेन्द्र पांडिया

एकलव्य एक स्वैच्छिक संस्था है जो शिक्षा, जनविज्ञान एवं अन्य क्षेत्रों में कार्यरत है। चकमक, एकलव्य द्वारा प्रकाशित अव्यावसायिक पत्रिका है। चकमक का उद्देश्य बच्चों की स्वाभाविक अभिव्यक्ति, कल्पनाशीलता, कौशल और सोच को स्थानीय परिवेश में विकसित करना है।

# इस बार की बात . . .

चकमक के हर अंक में कविता, कहानी और चित्रों की संख्या सबसे ज़्यादा होती है। हमारी कोशिश रहती है कि ये रचनाएँ, बच्चों की हों या बड़ों की, बेहतर से बेहतर हों।

तुम बच्चों की रचनाएँ तो हमें लगातार मिलती रहती हैं। इनमें से मौलिक और कुछ अलग तरह की रचनाएँ चुनने की हमारी हर बार कोशिश होती है। पिछले कुछ समय से तुम लोगों की बहुत सारी रचनाएँ हमें मिल तो रही हैं लेकिन इनमें से अच्छी, मौलिक (तुम्हारी अपनी लिखी हुई) रचनाएँ ज़रा कम ही निकलती हैं।

चलो बात करते हैं कि मौलिक रचनाएँ यानी क्या? कोई भी रचना करने के लिए सबसे ज़रूरी चीज़ है कि अपने आसपास की हर चीज़ पर ध्यान दिया जाए। फिर तुमने जैसा भी उनको देखा या महसूस किया वैसा ही औरों को बता सको, बोलकर या लिखकर।

जब कहा जाता है कि अपने आसपास की घटनाओं के बारे में लिखो, तो कई बार यह होता है कि लिखने वाले, घटना को आँखो देखे हाल की तरह लिख देते हैं। लिखने का यह एक तरीका तो है, और ठीक ही है।

लेकिन एक बेहतर तरीका भी है। जब कोई घटना किसी ने देखी, यह तो हुई एक बात। दूसरी बात है, उस समय देखने वाले ने क्या महसूस किया। यह महसूस करना हर व्यक्ति का अलग-अलग हो सकता है। और यह अलग महसूस करना या सोचना ही है जिससे कि एक ही घटना को देखकर अलग-अलग रचनाएँ लिखी जा सकती हैं।

जैसे कि सड़क पर एक आदमी ज़ोर-ज़ोर से चिल्लाता हुआ जा रहा है। उसे देखने वाले बहुत सारे लोग हैं। लेकिन देखने वाले सभी लोग, उस आदमी के बारे में एक जैसी बातें तो नहीं सोचेंगे ना !

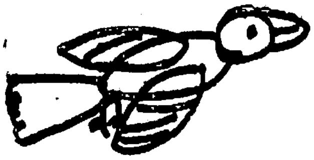

तो हम तुमसे यही उम्मीद करते हैं कि तुम जहाँ भी रहते हो, जो कुछ भी देखते-सुनते हो, उसे समझ कर, महसूस करके

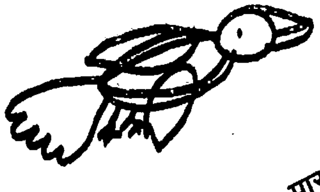

● पारुल बत्रा, टीकमगढ़, म.प्र.

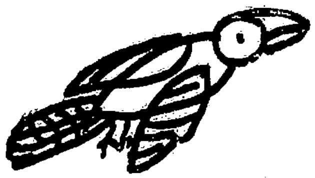

अपने तरीके से लिखने की कोशिश करोगे।

यहाँ एक सवाल हो सकता है कि जो कुछ हम देखें, महसूस करें उसे लिखने की क्या ज़रूरत है? इस पर हम ज़रूर बात करेंगे, लेकिन अगले किसी अंक में।

# पाठक लिखते हैं

**चकमक** मेरे स्कूल में आता है। मुझे बहुत अच्छा लगता है। इसमें जो आप कागज़ के खेल देते हैं, बहुत अच्छा लगता है। लेकिन मैं उसे बना नहीं पाता हूँ, कृपया सरल खेल दिया करें।

● चेतन आनंद साहू, सातवीं,
गरियाबंद, रायपुर, म.प्र.

**पत्रिका** अपने घोषित उद्देश्यों के लिए पूर्ण प्रतिबद्ध और बेजोड़ है। ज्ञानवर्द्धन और विज्ञान सम्मत दृष्टि के विकास के मायने में इसकी सामर्थ्य प्रशंसनीय है।

क्या कहानी, संस्मरण, एकांकी जैसी सृजनात्मक विधाओं के लिए गुंजाइश बढ़ाई नहीं जा सकती? पत्रिका को अधिक रोचक और लोकप्रिय बनाने के क्रम में यह आवश्यक है। हालांकि आपकी संस्था कुछ घोषित उद्देश्यों के साथ एक निश्चित क्षेत्र में कार्यरत है। संस्था की पत्रिका होने के नाते प्रसार और व्यावसायिकता के आयाम के बरअक्स इसे प्रयोजनमूलक होना ही अधिक शोभा देता है। फिर भी एक बात जो मन में आई लिख दी।

● चित्रेश,
जासापारा, उ.प्र.

मैं, सागर वाघेला आपकी बालपत्रिका 'चकमक' को अपने मित्र जो आपके पाठक भी हैं, पराग डांगे के द्वारा पढ़ता हूँ। मुझे आपकी 'चकमक' बहुत पसंद है। आपकी पत्रिका ज्ञान विज्ञान से भरपूर, मनोरंजक एवं रोचक है। मार्च का अंक मैंने पराग के द्वारा ही पढ़ा था। उसमें 'हाथी' के बारे में दी गई जानकारी मुझे बहुत अच्छी लगी। साथ ही साथ सिंगापुर की कहानी जिसका शीर्षक 'होशियार' था, वह भी बहुत अच्छी लगी। जब से मैंने आपकी यह पत्रिका पढ़नी शुरू की तो पहली बार पढ़ते ही मेरी जिज्ञासा इसके प्रति बढ़ती गई। आपके द्वारा हर अंक में जो विशेष जानकारी दी जाती है वह भी मुझे बहुत अच्छी लगती है।

● सागर वाघेला, रायपुर, म.प्र..

यहाँ से काटें

# चकमक
## सदस्यता फॉर्म

मुझे/हमें निम्न पते पर
माह .................. से
चकमक भेजना शुरू करें–
नाम ..........................
मोहल्ला ..........................
डाकघर ..........................
ज़िला ..........................
पिन ☐☐☐☐☐☐
सदस्यता शुल्क रु. ..........................

माह/वर्ष के लिए मनीआर्डर/ड्राफ्ट/चेक से भेज रहे हैं।

नाम एवं हस्ताक्षर

सदस्यता दरें

| | | |
|---|---|---|
| छह माह | : | 40.00 रुपए |
| एक साल | : | 75.00 रुपए |
| दो साल | : | 140.00 रुपए |
| तीन साल | : | 200.00 रुपए |
| आजीवन | : | 1000.00 रुपए* |

सदस्यता शुल्क मनीऑर्डर/ड्राफ्ट/चेक से 'एकलव्य' के नाम में इस पते पर भेजें –

**एकलव्य,**
**ई–1/25, अरेरा कॉलोनी,**
**भोपाल 462 016 (म.प्र.)**

भोपाल से बाहर के चेक से शुल्क भेजते समय कृपया 15.00 रुपए बैंक चार्ज अतिरिक्त जोड़ें।

**आजीवन सदस्यता भरने पर आपके किसी दोस्त/ परिचित को चकमक की एक साल की उपहार सदस्यता दी जाएगी।*

**सर्वप्रथम** तुम मुझसे इतनी मनमोहन कविताएँ ज्ञानवर्धक वैज्ञानिक लेख एवं बालसुलभ कहानी अपने भीतर संजोने के लिए शुभकामनाएँ ग्रहण करो। साथ ही तुम्हारे अभिभावकों यानि माननीय संपादक महोदय, कला सज्जक, विज्ञान–पथपरामर्शदाता आदि को मेरी ओर से शुभकामनाएँ एवं आशीर्वाद।

सचमुच बच्चों के भीतर स्वाभाविक अभिव्यक्ति, कल्पनाशीलता एवं कौशल को निखारने में चकमक का योगदान प्रशंसनीय एवं उल्लेखनीय है। भविष्य में मैं चकमक से इसी प्रकार की रचनात्मक एवं ज्ञानवर्धक रचनाओं की आशा करता हूँ। बाकी फिर कभी और।

● डॉ. मनोज गोपाल शर्मा
रीडर, हिन्दी विभाग जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय
दिल्ली

**कोई** भी बाल पत्रिका भारत की गौरवपूर्ण पत्रिका चकमक का मुकाबला नहीं कर सकती। आपको हैरानी तो होगी परन्तु मैं इसके पक्ष में हूँ। क्योंकि सबसे महत्वपूर्ण बात हर बाल पत्रिका में यह होती है कि क्या वह साधारण बच्चों का ऐसा आईना है जो उनको साफ-साफ निहारता है। चकमक में आप जैसी-भी कलाकृति या लेख या कहानी भेजते हैं, वह अधिकतर छप जाती है। इसका कारण आप जानते हैं क्या? नहीं। तो मैं आपको बताता हूँ चकमक एक ऐसी पत्रिका है जो बच्चों का मनोबल बढ़ाना चाहती है। यह एक सच्ची पत्रिका है जो कि बच्चे का अगर थोड़ा सा भी आत्मविश्वास देखती है तो उसकी रचना आदि अवश्य छाप सकती है या छाप लेती है।

● नकुल कुन्देरा, चौदह वर्ष
जालंधर, पंजाब

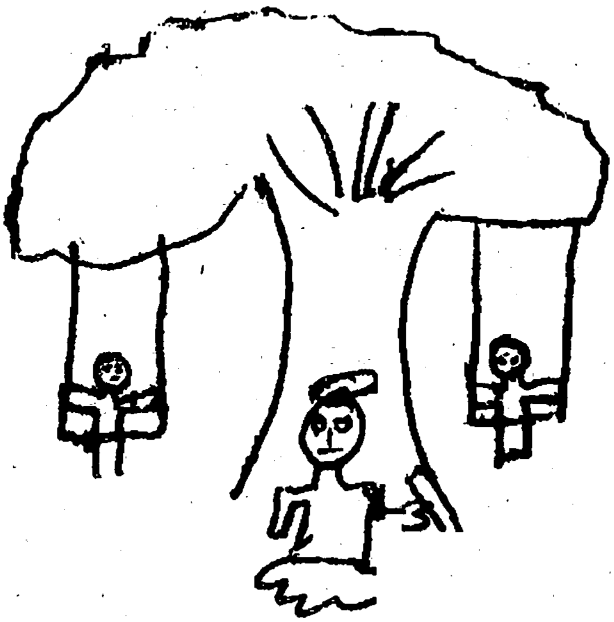

●समता ज्याष्ठ, पाँचवीं, शेरपुरा, राजस्थान

यहाँ से काटें

## चकमक का उपहार

**अगर आप चकमक का सदस्यता शुल्क भेज रहे हैं तो अपने किसी ऐसे परिचित/दोस्त/परिवारजन का पता यहाँ लिखें जिसे आप चकमक से परिचित कराना चाहते हों या चकमक का उपहार देना चाहते हों। हम उन्हें चकमक का एक अंक उपहार में भेजेंगे।**

**नाम** ............................
............................

**मोहल्ला** ............................
**डाकघर** ............................
**ज़िला** ............................
**पिन** □□□□□□
............................
............................

# ऐसा भी होता है

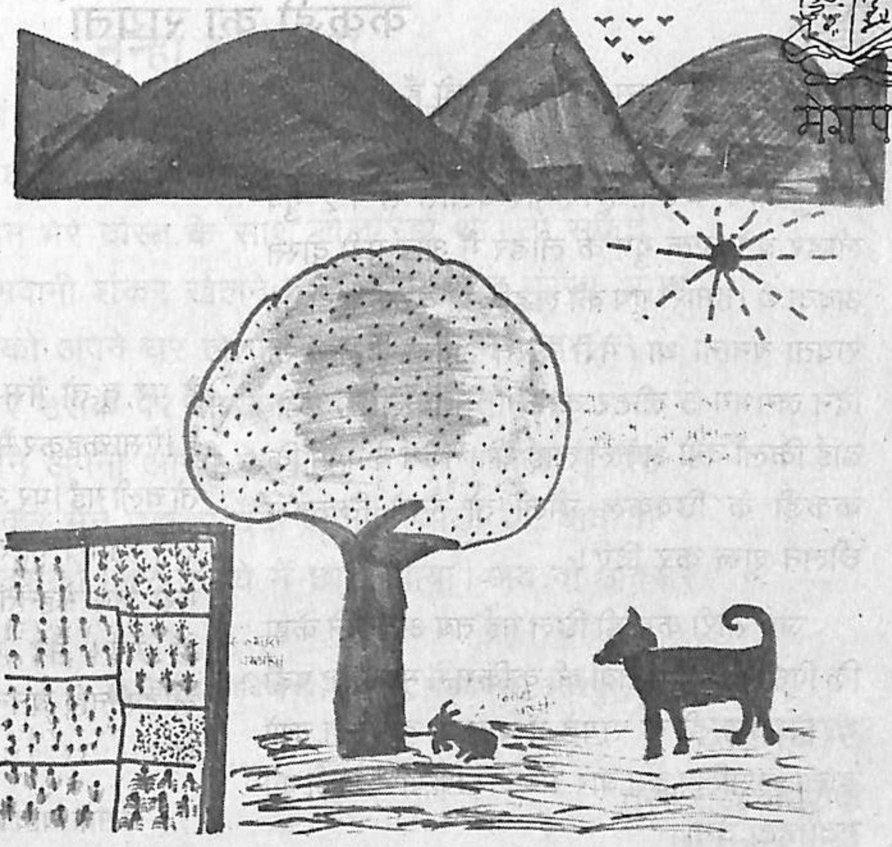

● शाहनवाज खान, बारह वर्ष, पीसांगन, अजमेर, राजस्थान

**एक** बार की बात है। मेरी परीक्षा खत्म हो चुकी थी। मेरे पास के रिश्तेदार के यहाँ शादी थी अतः हम लोगों को बारात में जाना था। इसलिए हम लोग जल्दी सो गए। मगर दोपहर को एक कुत्ता न जाने कैसे अन्दर आ गया और ऊपर चला गया। रात को लाइट न होने के कारण व उसके (कुत्ता) सो जाने के कारण हम लोगों को यह पता न चला कि कुत्ता अन्दर है। वैसे यह कुत्ता रोज़ आता था। मगर हम उसे देख नहीं सके। और सुबह जल्दी उठकर सब के सब बारात में चले गए। जब कुत्ते को भूख लगी जब वह चिल्लाने लगा और रोने लगा। उसने दरवाज़ा तोड़ने की कोशिश की लेकिन वह ऐसा नहीं कर सका। यह बात जब आसपास के लोगों को मालूम हुई तो वहाँ भीड़ जमा हो गई। तब सबने मिलकर व मेरे बड़े पापा ने वहाँ के ताले की दूसरी चाबी बनवाई व उसे खोला। तब कुत्ता भाग गया वह फिर कभी नहीं आया। यह बात जब वापस आने पर हमें मालूम हुई तो हम बहुत हँसे। मगर पापा ने कहा कि अब कभी भी सभी के जाने का मौका आए तो पूरे घर को ढंग से देखकर ताला लगाना चाहिए। ताकि फिर कोई मासूम जानवर अन्दर न रह जाए।

● अजीत कुमार जैन, बड़ोद, शाजापुर

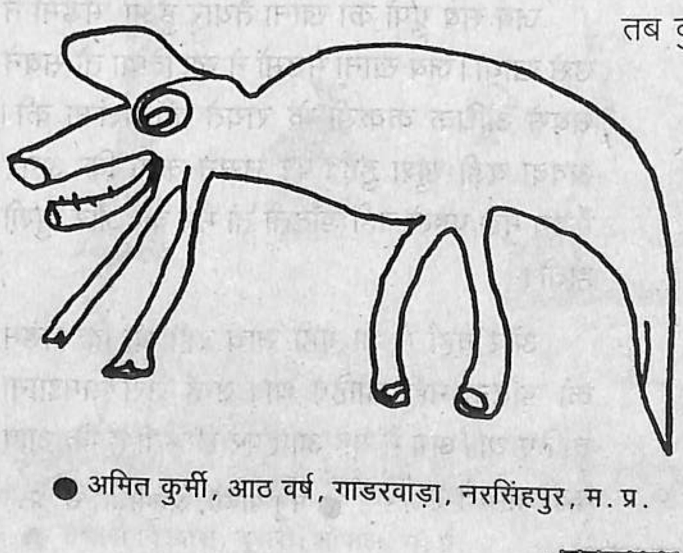

● अमित कुर्मी, आठ वर्ष, गाडरवाड़ा, नरसिंहपुर, म. प्र.

मेरा पन्ना

# ककड़ी का रायता

मैं क्लास आठ में पढ़ती हूँ। आजकल हमारे प्रैक्टिकल हो रहे हैं। मैडम ने कहा कि कुकिंग कराती हूँ। हमारे क्लास से 12 ग्रुप लीडर बने। एक ग्रुप के लीडर मैं और मेरी दोस्त अवदा थे। हमारी ग्रुप की लड़कियों को ककड़ी का रायता बनाना था। मेरी दोस्त अवदा कुकिंग के दिन लगभग 5 लीटर का देग, 6 किलो ककड़ी, ढाई किलो दही अकेले लाई थी। मैडम ने कहा कि ककड़ी के छिक्कल छीलो तो हमने छिक्कल छीलने शुरू कर दिए।

जब सारी ककड़ी छिल गई तब अवदा ने कहा कि पिछली बार सातवीं की कुकिंग में मुझे डाँट पड़ी थी कि ककड़ी के रायते में ककड़ी का गूदा क्यों डाला। इसलिए इस बार सब लड़कियाँ ककड़ी का गूदा हटा देना।

जब आधी से अधिक ककड़ियों का गूदा हट गया तब मैडम आ गईं। मैडम ने कहा कि ककड़ी का गूदा क्यों नहीं डाला। और उसे खूब डाँटने लगीं और कहा कि मैं समझती थी कि तुझे सब आता है पर तू तो भैंस है। ऐसा कहकर मैडम तो चली गईं। पर अवदा रोने लगी। और कहा मेरी सब मेहनत बेकार हो गई। मेरे को ग्रुप लीडर नहीं बनना चाहिए था।

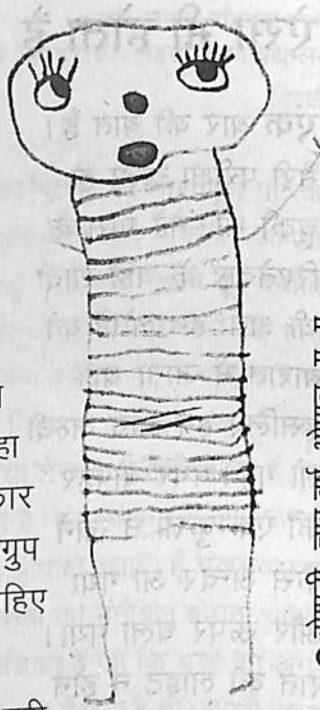

● रोशनी, चार वर्ष, भोपाल, म. प्र.

उसके बाद हमने वही ककड़ियाँ कोरी और रायता तैयार हुआ। जहाँ पर मैडमों के खाने के लिए रायता रखना था वहाँ अवदा और मैं गए। जैसे ही वहाँ अवदा गई उसके हाथ से फूलदान का पानी गिर गया और फैल गया। हमारी मैडम ने कहा ये जहाँ जाती है वहाँ सब गड़बड़ कर देती है।

जब सब ग्रुपों का खाना तैयार हुआ, मैंडमों ने उसे खाया। जब खाना मैडमों ने खा लिया तो सबने सबसे अधिक ककड़ी के रायते की प्रशंसा की। अवदा बड़ी खुश हुई। पर उसने कहा कि अगर मैडम मुझे पहले नहीं डाँटती तो मेरे को और खुशी होती।

और वहाँ मैं भी यही सोच रही थी कि मैडम को डाँटना नहीं चाहिए था। उन्हें उसे समझाना चाहिए था। अब मैं यह आप पर छोड़ती हूँ कि आप क्या सोचते हैं? ● मनु पाण्डे, अल्मोड़ा, उ. प्र.

● सोनम गुप्ता, पहली, शाहगढ़, सागर, म. प्र.

# नन्हा खरगोश

**मैंने** अपने बगीचे में एक खरगोश देखा। कुछ दिनों बाद उसके दो बच्चे हो गए। एक काला था और एक सफेद था। सफेद बहुत सुन्दर था। एक दिन मेरे दोस्त के साथ खेल रहा था। तो सफेद खरगोश के साथ भवानी शंकर खेलने लगा। मुझे बहुत गुस्सा आया। मैं सफेद खरगोश को अपने घर ले जा रहा था। तो मेरे हाथ से नीचे गिर पड़ा। और उसके पैर से खून बहने लगा। तो मेरी आँख से आँसू बहने लगे। मैंने अपनी आँखों के आँसू अपनी रुमाल से पौंछ लिए। और घर जाकर मैंने उसको दवा लगाई। थोड़ी देर बाद वो दौड़ने लगा तो मैं उसको फिर बगीचे में छोड़ आया। अब वो अक्सर हमारे घर आता है।

● निर्मल आदिवासी, आठवीं, मड़देवरा, छतरपुर, म. प्र.

## अख़बार

तरह तरह के रोज़  
अख़बार आते  
अच्छी बुरी ख़बरें  
हमको रोज़ सुनाते  
देश देश की ख़बरें लाते  
सबके मन को भाते  
ताज़ी ताज़ी ख़बरें लाकर  
सबका मन बहलाते  
कहीं लगी आग  
कोई रहा भाग  
कोई सड़क पर भटक रहा  
कोई फाँसी पर लटक रहा  
कहीं चोरी कहीं डाका  
कोई पैसा लेकर भागा  
ये अख़बार में आते  
सबका मन दहकाते  
तरह तरह के रोज़  
अख़बार आते

● विनोद प्रजापति, नान्देड़, उज्जैन, म. प्र.

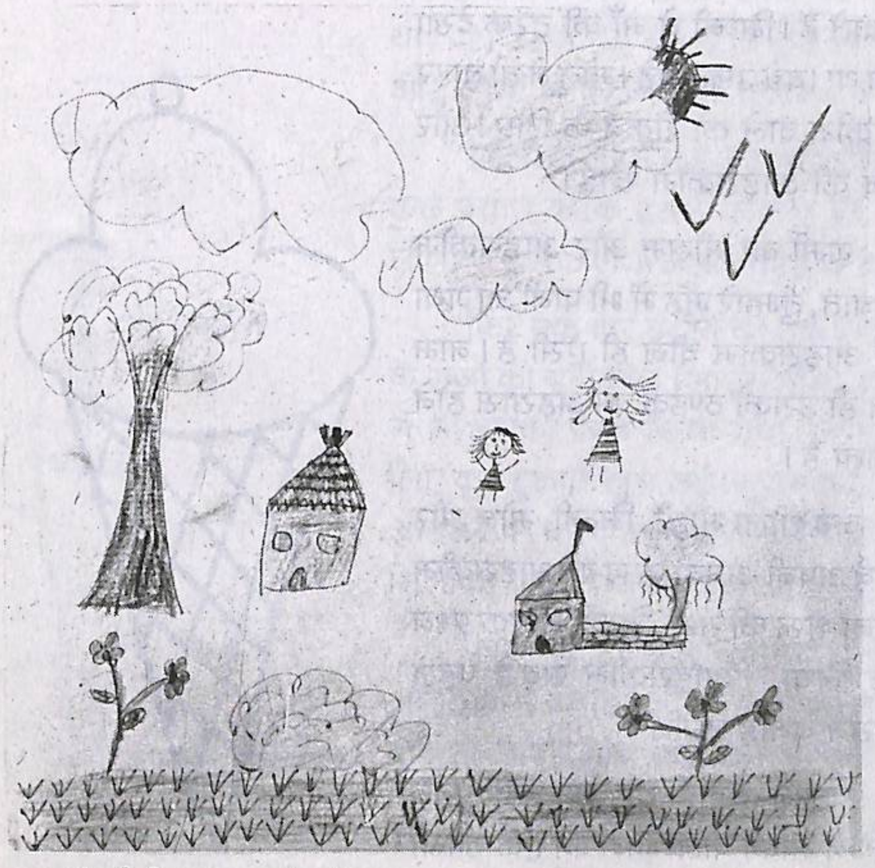

● संचारी विस्वास, दूसरी, भोपाल, म. प्र.

# ठण्डी मीठी – आइसक्रीम

मिन्नी और मोनू सुबह से दोपहर तक तीन बार झगड़ चुके थे। गर्मियों की छुट्टियाँ हैं। कभी दोनों मिलकर खेलते तो कभी झगड़ पड़ते। जब तीसरी बार दोनों की लड़ाई हुई तो माँ ने डाँटकर उन्हें सुला दिया। मिन्नी और मोनू आँख बन्द करके लेटे थे, पर नींद कहाँ आ रही थी। तभी बाहर किसी की आवाज़ सुनाई दी। मिन्नी ने धीरे से मोनू को हिलाया, ''मोनू, शीला मौसी आई है।''

मोनू उठकर बैठ गया। दोनों के चेहरों पर चमक आ गई। मौसी जब भी आती है दोनों की खूब मौज रहती है। बाहर शीला मौसी माँ से बच्चों के बारे में पूछ रही थी, तभी मिन्नी और मोनू ने एक दूसरे को इशारा किया, और दोनों चुपचाप जाकर मौसी के पीछे खड़े हो गए। मौसी ने इन दोनों के उतरे हुए चेहरे देखे तो समझ गई कि डाँट पड़ी है।

तभी सड़क पर से आइसक्रीम वाले की आवाज़ सुनाई दी। मौसी ने कहा, चलो, आइसक्रीम खाते हैं। मिन्नी ने माँ की तरफ देखा तो माँ मुस्करा दी। बस फिर क्या था। बच्चे उछल पड़े। मोनू ने तो बाहर की तरफ दौड़ लगा दी, आइसक्रीम वाले को रोकने के लिए। और फिर सबने अपनी-अपनी पसंद की आइसक्रीम खाई।

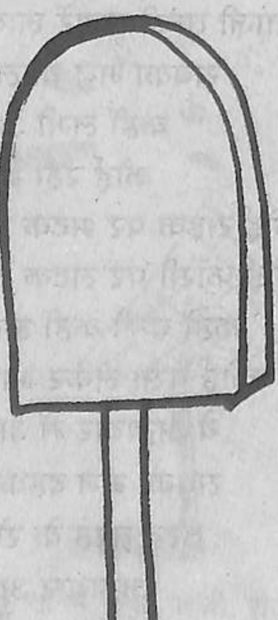

गर्मी का मौसम और आइसक्रीम की बात, तुम्हारे मुँह में भी पानी आ गया ना! आइसक्रीम चीज़ ही ऐसी है। नाम लेते ही उसकी ठण्डक का अहसास होने लगता है।

जब शीला मौसी, मिन्नी, मोनू और माँ ने अपनी-अपनी पसंद की आइसक्रीम खाना शुरू की तभी मिन्नी ने एक प्रश्न पूछ लिया, ''आइसक्रीम सबसे पहले किसने बनाई होगी?''

किसने बनाई यह तो नहीं पता। लेकिन मार्को पोलो नाम का एक खोजी

यात्री था। उसने अपनी यात्रा के बारे में एक किताब लिखी है। इस किताब में उसने लिखा है कि चीन में 'जमा हुआ दूध' बेचा और खाया जाता था। चीन में दूध में फलों का रस वगैरह मिलाकर, जमाया जाता था।''

''मार्को पोलो वेनिस का रहने वाला था। 17 साल की उम्र में वो अपने पिता और चाचा के साथ व्यापार करने यात्रा पर निकला था।'' माँ ने कहा।

''यह कितनी पुरानी बात है?''

''आज से लगभग 700 साल पहले की बात होगी।''

''मतलब यह कि आइसक्रीम यानी 'जमा हुआ दूध' इतनी पुरानी चीज़ है।'' मोनू ने अचरज से कहा।

''हाँ।'' फिर मौसी ने बताना शुरू किया। ''मार्को पोलो कई साल चीन में रहा। उसके बाद उसने और भी कई देशों की यात्रा की। वह जब इटली गया तो अपने साथ इस 'जमे हुए दूध' को भी ले गया था। वहाँ उसने यह नई चीज़ कुछ लोगों को खिलाई। धीरे-धीरे यह और लोगों में फैलने लगी। जिसनें भी इसे खाया पसंद किया।''

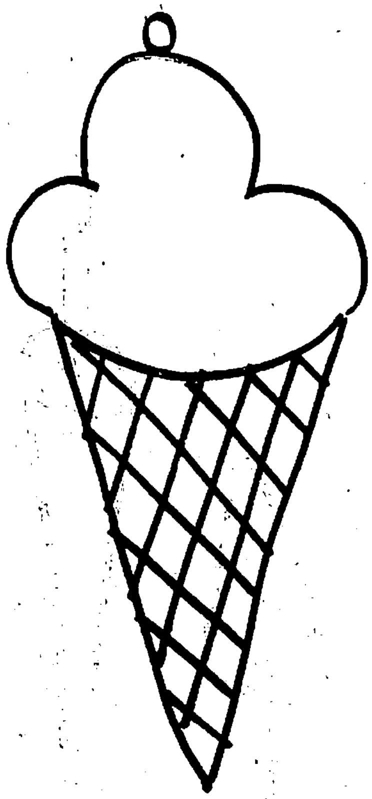

''इटली के लोगों ने इसे खाया और बनाना भी सीख लिया। कुछ-कुछ प्रयोग करके इसमें बदलाव भी किए। नए-नए स्वाद के लिए लोगों ने इसे अलग-अलग तरह से बनाया।''

''फिर एक बार इटली का एक रसोइया फ्रांस गया। उसने फ्रांस के राजा को यही चीज़ (आइसक्रीम) बनाकर खिलाई। फिर तो फ्रांस में भी इसको पंसद किया गया। फ्रांस में तो दूध जमाकर बेचने के लिए कई दुकानें खुल गईं। लगभग 200 साल पहले पैरिस में पहली आइसक्रीम की दुकान खुली। फ्रांस में पानी या दूध में फलों का रस मिलाकर उसे जमाकर बेचा जाता था।''

''फ्रांस के ही एक दुकानदार ने क्रीम और बर्फ मिलाकर आइसक्रीम बनाई। और तब जाकर बनी यह 'आइसक्रीम'। इसके बाद तो आइसक्रीम कई देशों में पहुँच गई।''

''तब भी क्या आइसक्रीम इसी तरह कप में और लकड़ी में

लगाकर बेचते थे।'' मोनू ने अपना ख़ाली कप मौसी को दिखाते हुए पूछा।

''यह सब चीज़ें तो धीरे-धीरे बाद में आती गईं। आइसक्रीम भी अलग-अलग जगह अलग-अलग प्रयोग करके कई तरह की बनाई गई।''

''वो जो आइसक्रीम कोन तुम खाते हो ना वो तो सन् 1904 में, यानी आज से लगभग 95 साल पहले पहली बार लोगों के सामने आया।''

''मौसी, आजकल तो आइसक्रीम फ्रिज में रखकर जमा लेते हैं। लेकिन पहले जब फ्रिज नहीं था तब आइसक्रीम कैसे बनाते थे?'' मोनू ने फिर एक सवाल पूछा क्योंकि उसकी आइसक्रीम ख़त्म हो चुकी थी।

मिन्नी ने कहा, ''क्यों, कुल्फी कैसे बनती है तुम्हें पता नहीं कुल्फी किसी फ्रिज में नहीं रखी जाती।''

''कुल्फी फ्रिज में तो नहीं रखी जाती, उसे अलग तरह से जमाया जाता है। बर्फ़ और नमक का मिश्रण बनाकर। मतलब तो है दूध, शक्कर, मावा आदि को मिलाकर ठण्डा करने से। फिर चाहे उसे किसी भी तरह से ठण्डा किया जाए। और, ठण्डा भी इतना करना है कि ये जम जाएँ।''

''लेकिन फ्रिज न हो तो बर्फ़ कहाँ से आएगा?'' माँ ने बच्चों से एक सवाल किया।

मोनू और मिन्नी सोच में पड़ गए। फिर मिन्नी ने कहा, ''सर्दियों में जो बर्फ़ गिरती है क्या वो इस काम में आ सकती है?''

''हाँ क्यों नहीं आ सकती, लेकिन सब जगह तो बर्फ़ गिरती नहीं?'' माँ बोली।

''इस बर्फ़ को बचाकर रखने के कुछ तरीके थे और जब फ्रिज नहीं था तब भी बर्फ़ बनाई जाती थी। लेकिन इसके बारे में फिर कभी. . .'' मौसी ने कहा।

तभी बाहर सड़क पर कुल्फी वाले की घण्टी की आवाज़ सुनाई

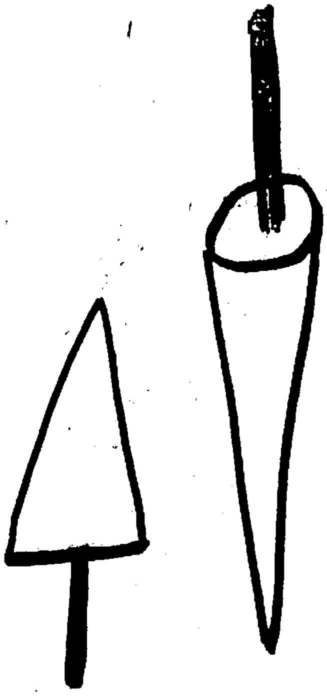

दी। मौसी ने कहा, "चलो, अपन कुल्फी वाले से ही पूछ लेते हैं कि वो कुल्फी कैसे जमाता है।"

मोनू तो जैसे इन्तज़ार ही कर रहा था। झट से बाहर भागा। माँ बोली, "अभी तो आइसक्रीम खाई है, अब नहीं।" लेकिन तब तक मिन्नी और मौसी भी बाहर निकल चुकी थीं।

कुल्फी वाले के ठेले पर एक चौकोर डिब्बा रखा था। उस पर लाल रंग का कपड़ा लिपटा था। मौसी ने पूछा, "भैया हम लोग जानना चाहते हैं कि आप कुल्फी कैसे जमाते हो, बताओगे क्या?"

कुल्फी वाले ने तिरछी नज़रों से इन लोगों को देखा। मौसी ने कहा, "कुल्फी भी खाना है हम तीनों को।"

कुल्फीवाले ने डिब्बे पर से लाल कपड़ा हटाया। डिब्बे में बहुत सारे खाँचे लगे थे। ये सब खाँचे टीन के बने थे। ये खाँचे टीन की बनी जाली में फँसे थे। नीचे डिब्बे में पानी था। कुल्फी वाले ने बताया कि यह पानी नहीं है। डिब्बे में नमक और बर्फ़ मिलाकर भरा था। अब तक बर्फ़ पिघल चुका है। दूध, शक्कर और मावा मिलाकर इन खाँचों में भरते हैं और, इसमें एक लकड़ी रख देते हैं। फिर इन खाँचों को डिब्बे के ऊपर लगी जाली में फँसा देते हैं। खाँचों का लगभग पूरा हिस्सा नमक बर्फ़ के मिश्रण में डूबा रहता है।

"कितनी देर में यह दूध और मावे का मिश्रण जम जाता है?"

"पाँच-सात मिनट में।"

"वाह यह तो बढ़िया फ्रिज है।" मोनू बोला।

मिन्नी ने मोनू को टोका, "फ्रिज नहीं, वो तो अलग चीज़ है। क्यों मौसी?"

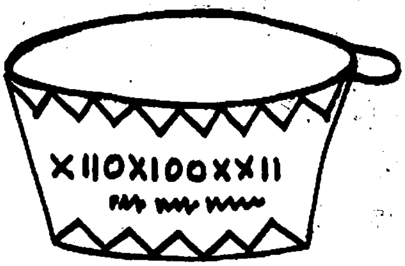

कुल्फी वाला आगे बढ़ गया। मौसी ने घड़ी देखी, "बहुत देर हो गई, मुझे जाना भी है।" मिन्नी और मोनू ने मौसी को बाहर तक छोड़ा और वापस घर में आकर सोचने लगे,'अब क्या करें'। फिर अचानक दोनों ने एक साथ कहा, "कुल्फी बनाई जाए।" ■

# आओ खेलें खेल – गाएँ गीत

**पिछले** अंक में हमने एक ऐसे खेल के बारे में बात की थी जिसमें खेलते हुए गीत भी गाया जाता है। ऐसे कई खेल हैं। मज़ेदार बात यही है कि खेल एक ही जैसा या थोड़े अलग तरीके से कई जगहों पर खेला जाता है लेकिन हर जगह उसके साथ गाया जाने वाला गीत अलग होता है।

इस बार हम जिस खेल के बारे में बात कर रहे हैं वो तुमने भी ज़रूर खेला होगा। कुछ इस तरह खेला जाता है यह खेल –

दो या दो से अधिक खिलाड़ी इसमें शामिल हो सकते हैं। गोल घेरे में बैठकर सब अपने-अपने हाथ ज़मीन पर इस तरह रखते हैं कि उँगलियाँ ज़मीन पर टिकी रहें लेकिन हथेली ऊपर रहे। यानी हाथ का घोड़ा बनाकर रखते हैं।

● विजय कुमार, दहेड़, तजपुरा, होशंगाबाद, म. प्र.

फिर जितने लोग इस खेल में शामिल हैं उनमें से कोई एक गीत गाते हुए सबके हाथ के ऊपर से उँगली छुलाता जाता है।

इस खेल के लिए अलग-अलग गीत गाए जाते हैं। और थोड़ा सा खेल में भी अन्तर हो जाता है।

जैसे हमारे आसपास के इलाके में यह गीत गाया जाता है –

**अटकन मटकन दही चटाकन**
**बगला झूले बगली झूले**
**सावन मास करेला फूले**
**फूल फूल की बावड़ी**
**राजा गया दिल्ली**
**दिल्ली से लाया सात कटोरी**
**एक कटोरी फूटी**
**राजा की टाँग टूटी**
**काली कोयल हाथ पसार**

इसमें 'हाथ पसार' के साथ ही जिस हाथ पर उँगली आती है वो हाथ पसारकर ज़मीन पर फैला देता है। जबकि इस गीत में –

**चुन चुन बनिया**
**फली का तेल**
**बनी मिठाई**
**खाई मिठाई**

अगला बगला झूला
राजा की बेटी ऐसी थी
फूलों के घर में रहती थी
राजा गया दिल्ली
दिल्ली से लाया बिल्ली
बिल्ली ने मारा पंजा
राजा हो गया गंजा
चल बैठ घोड़ा पानी पी

'चल बैठ घोड़ा पानी पी' के साथ ही जिस हाथ पर उँगली आती है उस हाथ को, अँगूठे और उँगली की चिमटी से पकड़कर अलग कर देते हैं।

इसी खेल के लिए बंगला में गीत इस प्रकार है –

इकिर मिकिर चाम चिकिर
चामेर कांटाए मजुमदार
धेये एलो दामोदर
दामोदरेर हाड़ी कुड़ी
दोआरे बोशे चाल कूटी
चाल कुटते होलो बैला
भात खाए शे दूपुर बैला

भाते पोड़लो माछी
कोदाल दिए चाँची
कोदाल होलो भोता
खैक शियालेर माथा

जिस हाथ पर आख़िरी शब्द आता है वो हाथ पीछा हटा दिया जाता है। और मलयालम में यह गीत है –

आक्क तिक्क तानवरम्बे
कल्ले कुत्त करिंगुत्ते
चीप कंडिल्ला
चित्र कंडिल्ला
आर एड़ित्त
...... एड़ित्त

इसमें आख़िरी शब्द के पहले जिसके हाथ पर गीत ख़त्म होता है उसका नाम जोड़ लेते हैं। और उसका हाथ एक तरफ कर दिया जाता है।

● आशीष शर्मा, डुंगरिया, छिंदवाड़ा, म. प्र.

तुम्हारे आसपास भी ऐसे खेल और उनके खेल गीत होंगे ही। अगर उनके बारे में तुम हमें लिखोगे तो चकमक को और पाठकों को भी हम बता सकते हैं।

चित्र : 'अंकुर' की 'सफ़रनामा' से साभार।

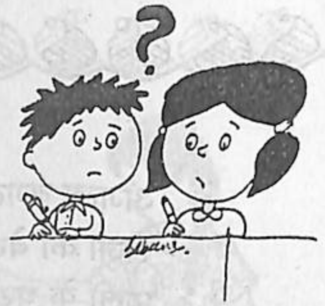

सितम्बर, 98 से अब तक तुम इस शृंखला में कई लोगों से उनके शिक्षकों की यादें पढ़ चुके हो। तुम भी अपने माँ-पिताजी से और दूसरे बड़े लोगों से कहो, कि वे अपने शिक्षकों के बारे याद करके कुछ लिखें। इस बार कुड़कई, बिलासपुर के एक शिक्षक ने अपने शिक्षक के बारे में हमें लिखा है। साथ ही चकमक की एक लेखिका गिरिजा कुलश्रेष्ठ ने अपनी माँ से उनके बचपन के बारे में, शिक्षक के बारे में बातचीत की और हमें लिख भेजा। तुम भी पढ़ो।

# और सर की आँखें भर आईं

**शिक्षक** बाहर से जितना कठोर दिखता है वास्तव में उसका हृदय अंदर से उतना ही कोमल होता है। जो कठोरता बाहर से दिखाई पड़ती है, वह छात्रों की भलाई के लिए होती है।

जब मैं स्वयं छात्र, था तो भले ही मुझे अपने शिक्षक की कठोरता से कष्ट हुआ। परन्तु आज मुझे स्वयं यह लगता है कि छात्र जीवन में जो थोड़ी सी कठोरता शिक्षक धारण करते हैं, वह छात्रों के लिए अत्यंत ज़रूरी है।

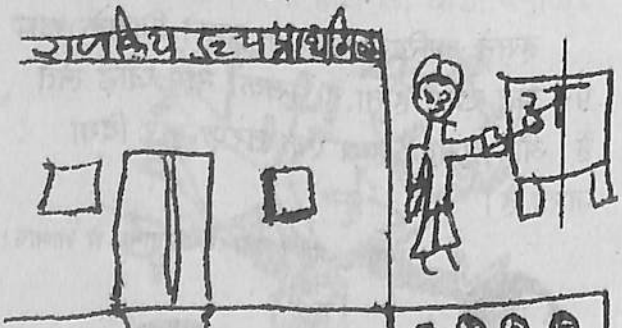

सन् 1984–85 की बात है। मैं उन दिनों शास. बहु. उच्च. मा. शा. पेण्ड्रा में कक्षा 8 का छात्र था। कक्षा में मेरी स्थिति औसत दर्जे के छात्र के रूप में थी। सभी विषयों में ठीक होने के बावजूद भी जैसे ही गणित के कालखण्ड की घंटी लगती, मेरी सिट्टी-पिट्टी गुम हो जाती थी। कारण.. हमारे गणित के शिक्षक श्री एम.एस. सेंगर पढ़ाई के मामले में काफी कड़े थे। उनका पढ़ाई का तरीका नियमित एवं कठोर था। छात्रों को उनके कालखण्ड में पूरी तैयारी के साथ बैठना पड़ता था। उनका दिया होमवर्क न करने पर, कापी साफ सुथरी एवं पूर्ण न होने पर उनकी कड़ी डाँट के अलावा कान खिंचवाने एवं उनके सुधारसिंग (छड़ी) के कहर बरपने का भी भय रहता था।

अगस्त माह की मूल्यांकन परीक्षा में मुझे शून्य अंक मिला। बस फिर क्या था, सेंगर सर की नज़र मुझ पर टेढ़ी हो गई। काफी नाराज़ हुए। शून्य पाने के बाद अक्सर वे मुझे कहा करते, ''अक्षय पढ़ाई ठीक से करो वरना वार्षिक परीक्षा में डबल शून्य पाओगे।'' उनकी बात सुनकर मैं अपने आप में न सिर्फ अपमानित महसूस करता, बल्कि गणित के रिजल्ट के प्रति अजीब सा भय मेरे मन में समा गया था कि कहीं सर की बात सही न हो जाए....

 ● समता जयाप्ठ, पाँचवीं, शेरपुरा, राजस्थान

जैसे-जैसे परीक्षा नज़दीक आती गई, मेरी पढ़ाई भी तेज़ होती गई। गणित पर विशेष ध्यान दे रहा था कि कहीं सर की बात.... और सर थे कि डबल शून्य पाने की बात कक्षा में दोहराने से नहीं चूकते थे।

परीक्षा समाप्त हुई। मेरे सभी पेपर अच्छे गए, परन्तु इसके बावजूद भी मेरा डर कम नहीं हुआ था। रिजल्ट आया.... मैंने परिणाम देखा। मैं काफी अच्छे अंकों से उत्तीर्ण हुआ था। अपने सभी साथियों के साथ मैं भी रिजल्ट लेने स्कूल गया। हमारे सेंगर सर रिजल्ट दे रहे थे। मैंने डरे मन से उन्हें देखा... फिर आश्वस्त होकर उनके पास पहुँचा। उन्होंने मुस्कुराते हुए रिजल्ट निकालकर दिया। मैंने झुककर उनके पैर छुए। सेंगर सर खड़े हुए, उन्होंने मुझे अपने गले से लगा लिया... सर की आँखें भर आईं थी। मैं आत्मविभोर हो उठा।

आज उस घटना को बीते डेढ़ दशक से अधिक समय हो गया है। आज मैं स्वयं शिक्षक हूँ, परन्तु उस घटना को मैं आज तक नहीं भूला हूँ। गाहे-बगाहे मुझे अपने सर की याद आ जाती है।

गुरू एवं शिष्य के सम्बन्ध में कबीर की ये पंक्तियाँ कितनी प्रासंगिक हैं –

''गुरू कुम्हार सीस कुंभ है गढ़ गढ़ काढ़े खोट
अंतर हाथ सहार दे बाहर मारे चोट ॥

● अक्षय नामदेव
आ. जा. क. वि. कन्या पूर्व मा. शाला कुड़कई, बिलासपुर, म. प्र.

---

## वह सबक

''**उन** दिनों स्कूल पूरे आठ घंटे लगता था। चार घंटे सुबह से दोपहर तक और तीन से चार घंटे तक शाम को,'' कहते कहते माँ की आँखों में पूरा बचपन साकार हो उठा।

''यह सन् 46-47 के आसपास की बात है। तब मध्यप्रदेश को मध्यभारत कहा जाता था। ग्वालियर में सिंधिया जी का राज था। पर गाँवों की व्यवस्था पूरी तरह जमींदारों के हाथों में थी। स्कूल की देखरेख भी वही करते थे। जब हम पढ़ते तब जमींदार साहब खिड़की में बैठें पढ़ाई का निरीक्षण करते रहते थे।''

माँ कुछ देर रुकीं फिर कहने लगीं, ''हमें छोटेलाल पंडित जी पढ़ाते थे। पाँच रुपये से दस रुपये तक वेतन मिलता था। कच्ची लेकिन साफसुथरी पाटौर (खपरैल) में हमारी कक्षा थी। जिसकी चारों दीवारों पर दिशाओं के हिसाब से बड़े अक्षरों में पूर्व,पश्चिम, उत्तर, दक्षिण लिख दिया गया था ताकि हमें दिशा ज्ञान बना रहे।''

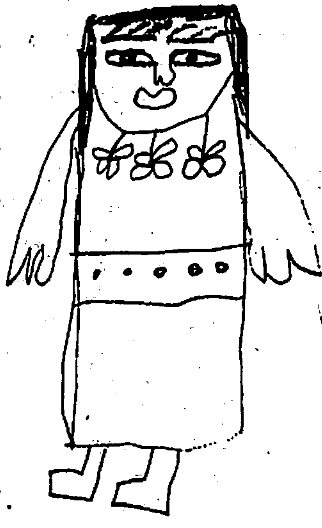

● चिन्ना फिलोमिना,पहली, भोपाल, म. प्र.

''झकाझक सफेद कमीज़ और धोती पहने, माथे पर रोली का तिलक लगाए, पैरों में खड़ाऊ डाले पंडित जी जब शाला में आते तो हम सब इतनी फुर्ती से सम्मान के साथ खड़े हो जाते मानो इतनी देर से खड़े होने की तैयारी में ही बैठे थे।''

''लगभग पन्द्रह मिनट तक ईश-विनय होती थी- 'हे सर्वज्ञ कृपालु दयानिधि....' उसके बाद कपड़ों,

बालों, दाँतों और नाखूनों का निरीक्षण करते। किसी क्रे भी कपड़ों में सफाई की या दाँतों में दमक की कमी मिलती तो सज़ा के लिए उनके हाथों में हरे बाँस की पतली संटी रहती थी। जो हथेली पर तो बाद में पड़ती, पहले वो हवा में लहराते हुए 'साँय' की आवाज से ही दिल में दहशत भर देती थी। और सामने से हथेली को खींचने का खतरा तो कोई उठाना भी नहीं चाहता था। क्योंकि फिर तो वह संटी प्रचण्ड रूप से बाँहों, बगलों, पीठ, पैर, सिर कहीं भी अपना नाम लिखने को बेचैन हो जाती थी। लड़का तिलमिलाता कहता, 'पंडी मर गया'।''

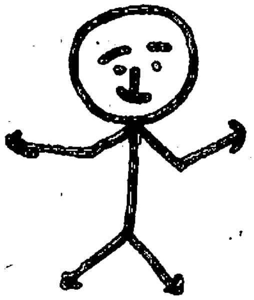

''पंडी नहीं मरा बेटा, तेरे सामने खड़ा है,' पंडित जी उसे बहलाते हुए कहते थे।''

''इसके बाद सबकी पट्टियों और सुलेख की जाँच होती थी। उस समय स्लेट कहाँ थी? काठ की बड़ी-बड़ी पट्टियाँ ही स्लेट का काम देती थीं। जिन्हें कालिख से पोतना और काँच की घिसाई से चमकाना उतना ही ज़रूरी काम था, जितनी शरीर और कपड़ों की सफाई या गिनती-पहाड़ों की रटाई। सरकंडे से कलम बनाई जाती थी जो खुद को ही बनानी होती थी। गुरुजी हर छात्र को अच्छी तरह पहले सिखा देते थे बनाना। बड़े अक्षरों के लिए चौड़ी नोंक और छोटे अक्षरों के लिए पतली नोंक बनाना हमें खूब आता था। खड़िया के घोल में डुबाकर बड़ी सफाई और सुघड़ता से सुलेख लिखना होता था। वरना लकीर जरा भी टेढ़ी मेढ़ी हुई या अक्षर जरा भी बेडौल हुए

तो उनकी संटी को सक्रिय होने में देर नहीं लगती थी।''

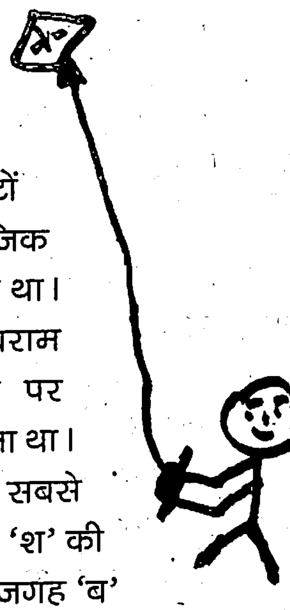

''सुबह के चार घण्टों में हिन्दी और सामाजिक अध्ययन पढ़ाया जाता था। हिन्दी में मात्रा और विराम चिह्नों तथा व्याकरण पर विशेष ध्यान दिया जाता था। शुद्ध वचन और लेखन सबसे पहली शर्त थी उनकी। 'श' की जगह 'स' या 'व' की जगह 'ब' को वे बिल्कुल बर्दाश्त नहीं कर सकते थे। ऐसी गलतियों पर पता नहीं उनमें कहाँ से क्रोध का संचार हो जाता था। मात्राओं के उच्चारण में वे हमारी ही नहीं अपनी भी जान सुखा लेते थे। 'क' पे बड़े आ की मात्रा लगी तो का पूरी तरह मुँह खोलकर बुलवाते। फिर छोटी इ के लिए झटके के साथ रुकते - कि, और बड़ी ई की मात्रा के लिए फिर वही लम्बा स्वर की S S S। इस तरह मात्राओं के उच्चारण में गलती होने का सवाल ही नहीं था।''

''इतिहास को वे कहानी बनाकर पढ़ाते थे और भूगोल को कभी नक्शों और मॉडलों से तो कभी बाहर मैदान में ले जाकर सिखाया था। कागज़ पर ग्राफ बनवाकर फिर उन्होंने भारत का नक्शा बनाना सिखाया। खानों (वर्गों) की संख्या के हिसाब से नक्शा इतना अच्छा बनता था कि न कच्छ की खाड़ी

● इस पेज के चित्र : आकाश भारद्वाज, छठवीं, रामपुरा, मन्दसौर, म. प्र.

में कहीं गलती होती थी न पूर्वांचल की सीमाओं में।

अन्त में इबारत और मिले हुए शब्द लिखवाते और कोई न कोई व्यवहारिक कार्य करवाते। जैसे कभी तकली चलवाते, कभी नारियल के खोखले के छोटे-छोटे टुकड़ों को घिसघिसकर बटन बनवाते तो कभी गीली मिट्टी से फलों व सब्जियों के मॉडल बनवाते थे। उनमें रंग भरने में भी कम सावधानी नहीं रखनी पड़ती थी। बैंगन को बैंगनी रंग से रंगा जाता था, पर डंठल के लिए प्राकृतिक हरा रंग ही तैयार करना पड़ता था। कभी-कभी चित्र भी बनवाते और खुद बैठकर रंग भरवाते थे। सुबह की पाली बारहबजे खत्म हो जाती थी।'' माँ थोड़ा रुकी।

''फिर दूसरी पाली,'' मैं पूरी तन्मयता से सुन रही थी इसलिए यह व्यवधान कुछ खला।

''दूसरी पाली दो से ढाई बजे तक शुरू हो जाती थी,'' माँ फिर कहने लगी, '' बीच में जो दो घण्टे का विश्राम मिलता था उसमें पंडित जी तो अपना खाना बनाते खाते और हम लोग जुट जाते अपनी पट्टियों को, धोने, पोतने और चमकाने में।''

''शाम की पाली गणित और खेल की होती थी। गणित में गिनती-पहाड़े, पाव, पौना, ड्योढ़ा रटने पड़ते थे। लेकिन जोड़ बाकी आदि सवाल जवाब मौखिक ज़्यादा होते थे लिखित कम।''

''पी.टी. करवाते समय जब वो कड़कदार आवाज़ में सावधान कहते तो लगता था पखेरुओं का झुंड पंख फड़फड़ाकर एक साथ उड़ने को तैयार हो।''

''खेलों में खो खो, कबड्डी, रुमाल झपट, कोड़ामार, कुक्कुट युद्ध जैसे अनेक खेल होते

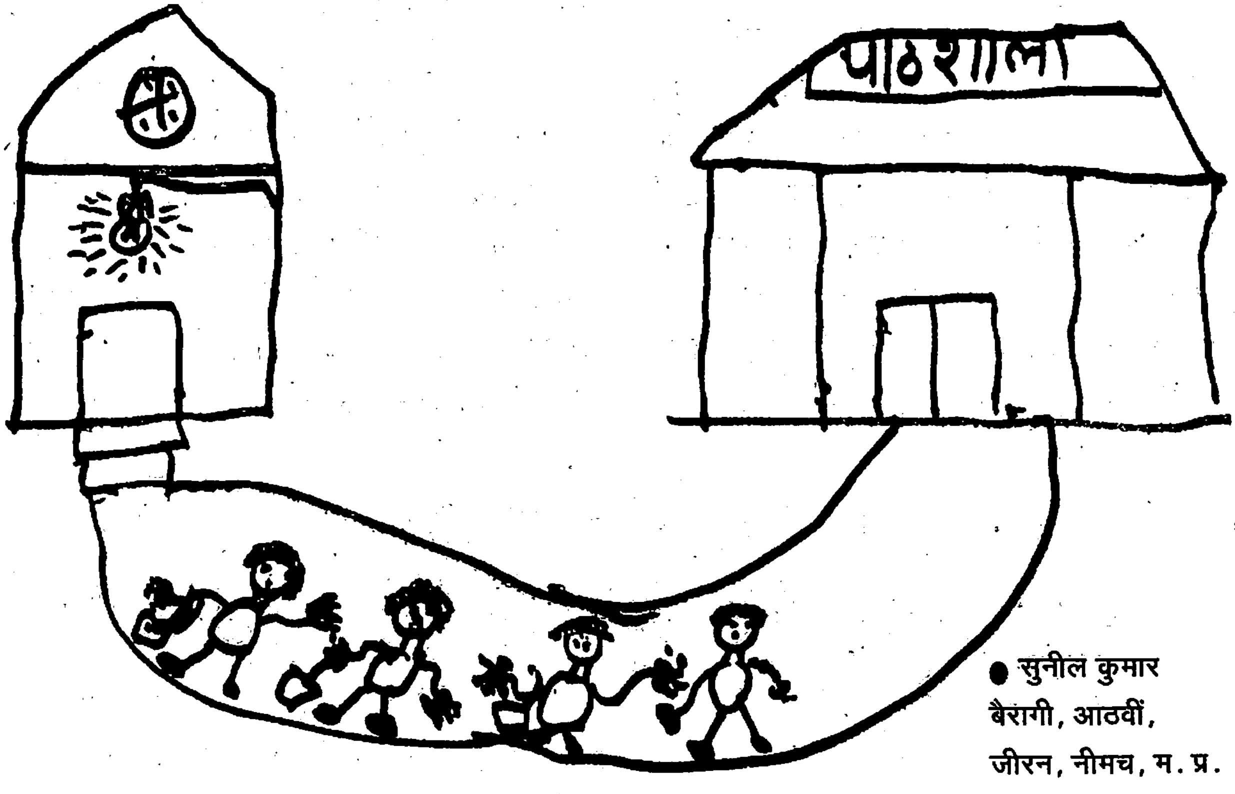


● सुनील कुमार
बैरागी, आठवीं,
जीरन, नीमच, म.प्र.

थे। जिनमें कुक्कुट युद्ध सबसे मज़ेदार होता था। लगता था कि लड़के नहीं दो जाँबाज मुर्गे भिड़ रहे हों। हाँ, हम लड़कियों को यह खेल नहीं खिलाया जाता था। हम तो केवल दर्शक होती थीं।''

''आपका मन तो होता होगा खेलने का,'' मैंने माँ से कहा।

''होता क्यों नहीं था, लेकिन हम लड़कियों के खेलने की अलग व्यवस्था थी अन्दर बाड़े में।'' माँ ने मेरा समाधान करते हुए कहा।

''शाम को साढ़े पाँच बजे छुट्टी मिलती थी। पंडित जी दिशा मैदान और संध्या वन्दना के लिए चले जाते और हम दिनभर की पढ़ाई के बाद आज़ाद। हालाँकि तब न इतनी किताबें थीं न इतना पाठ्यक्रम। बस एक पट्टी, कलम और दो तीन किताबें।''

''रात को भी पंडित जी की पाठशाला लगभग दो घंटे चलती थी। रात को लालटेन या चिमनी के उजाले में वे लोग पढ़ते थे जो खेती के कामकाज या गाय-भैंस चराने के कारण दिन में नहीं पढ़ पाते थे। या वो लोग जो पढ़ाई में पीछे रह जाते थे। पंडित जी को प्रसिद्धि की ज़रूरत नहीं थी क्योंकि काम उनके लिए पूजा की तरह था जिसे वे पूरी लगन और ईमानदारी से करते थे।''

''वास्तव में ही ऐसे शिक्षक कम होते हैं'', मैंने श्रद्धा के साथ कहा, ''आप सचमुच एक आदर्श शिक्षक से पढ़ी हैं माँ!''

''अरे उनका तब तो भरपूर सम्मान था ही, आज भी लोग उनके नाम लेते ही आदर से झुक जाते हैं। कुछ तो आज भी थरथराते हैं उनके नाम से। क्यों, देवी भैया? '' माँ ने मुस्कुराते हुए अपने पैंसठ वर्षीय सहपाठी देवीराम को सम्बोधित किया, तो देवीराम लज्जा, आदर और खुशी से भर उठे।

''देवीराम कक्षा में सबसे फिसड्डी थे। कभी सबक पूरा करके नहीं ले जाते थे इसलिए मार से बचने के लिए कभी - 'पंडी इक्की (पेशाब) कर आऊँ?' कभी - 'पंडी दुक्की (शौच) कर आऊँ' रटते रहते थे।'' इस वाक्य के साथ ही माँ की हँसी फूट पड़ी। हम सब लोग भी हँसने लगे। मैंने देखा माँ के चेहरे की झुर्रियाँ उल्लास की चमक में कहीं गायब हो गई हैं।

''तब कितनी पिटाई होती थी तुम्हारी देवी भैया। याद है ना?'' माँ ने बात आगे बढ़ाई।

''सब याद है बाई साब। सब याद है'', देवीराम बचपन की यादों में खो गए, ''वह मार अच्छी थी। उस मार का ही नतीजा था कि मुझ जैसा निखट्टू भी उँगलियों पर हिसाब करना सीख गया और वह सबक?''

● कुलसुम सिद्दिकी, दूसरी, लखनऊ, उ. प्र.

मेरी उत्कण्ठा बढ़ी, "सुनाइये न मामाजी अपना वह सबक।"

तब देवीराम ने बकायदा एक छात्र की तरह खड़े होकर अपना सबक पूरी चुस्ती और अनुशासनबद्ध तरीके से सुनाया।

"तीन अक्षरों के शब्द् जैसे महल, बतख, नगर... चार अच्छरों के शब्द जैसे खटमल, अजगर...। माला काला, पानी नानी, सूप धूप, केशव, मेला . . . पीतल का रंग पीला होता है। नीम कड़वा होता है। बताशा मीठा होता है। सड़ा फल मत खा। रोज़ दांतों में मंजन कर। झूठ मत बोल। लज्जा नारी का भूषण है। गिद्ध की निगाह तेज होती है। बर्र का डंक जहरीला होता है। मच्छर के काटने से मलेरिया फैलता है। गन्दा पानी इकट्ठा मत होने दो। पेड़ मत काटो। जीवों पर दया कर। ठठ्ठा मत कर। बादाम का छिलका कड़ा होता है। सुबह घूमना अच्छा होता है। चोरी करना बुरी बात है। मीठा खाने से दाँतों में कीड़ा लगता है।"

मिले अच्छर याद कर। जैसे डुग्गी, घुग्गू, मच्छर झझ्झर, कंकड़। जैसे गिद्ध, डिब्बा, कुप्पा, बिल्ली, पिल्ला.. कसैला तीखा.... ड्योढ़ा एक ड्योढ़ा, ड्योढ़ा दूनी तीन... तीन पाव पौन.. छह पाव डेढ़... एकन पन्द्रह.. दूनी तीस, तीय पैंतालीस, चौके साठ..."

सबक चल रहा था लगातार.. बिना साँस लिए.. पूर्ण विराम तो दूर कहीं अल्पविराम भी नहीं। हम सबकी हँसी ठहाकों में बदल चुकी थी, पर देवीराम पूरी गंभीरता और सजगता के साथ सबक को पूरा ही सुनाने की धुन में बोले चले जा रहे थे। एक छह-सात साल के छात्र की तरह जिसे बीच में ही ध्यान भंग हो जाने पर सबक भूल जाने का डर हो, भूल जाने पर गुरुजी की पिटाई का डर हो। फिसड्डी कहलाने का डर हो या कि वह भी दिखा देना चाहता हो कि सबक याद करने में वह भी कम नहीं है किसी से....।

● गिरिजा कुलश्रेष्ठ


## खेल-खिलौने बनाने और अन्य गतिविधियों की पुस्तकें

**1. खेल-खेल में :** सस्ती और सुलभ चीज़ों से विज्ञान के रोचक खिलौने बनाने की जानकारी, मूल्य : 10 रुपए।
**2. कबाड़ से जुगाड़ :** बेकार सामान से विज्ञान के प्रयोग करने और समझने की पुस्तक, मूल्य : 15 रुपए।
**3. खिलौनों का बस्ता :** कुछ नए प्रयोगों और मॉडलों की किताब, मूल्य : 15 रुपए।
**4. माचिस की तीलियों के रोचक खेल :** खेल पहेलियों की पुस्तिका, मूल्य : 3 रुपए।
**5. वर्ग पहेली :** चकमक में प्रकाशित वर्ग पहेलियों का संकलन, मूल्य : 6 रुपए।

**6. खेल खिलौने :** चकमक में प्रकाशित कुछ खेलों का संग्रह, मूल्य : 15 रुपए।
**7. एक आधार अनेक आकार :** ओरीगेमी पर हिन्दी में एक किताब, मूल्य : 20 रुपए।

*ये प्रकाशन डाक से भी मँगवाए सकते हैं। राशि अग्रिम भेजें, साथ में डाक खर्च के लिए मूल्य की 10 प्रतिशत राशि (रजिस्टर्ड डाक के लिए 12 रुपए और अतिरिक्त) जोड़कर मनीआर्डर अथवा ड्राफ्ट एकलव्य के नाम पर बनवाकर भेजें। अधिक जानकारी के लिए सम्पर्क करें।*

**एकलव्य**
ई-1/25, अरेरा कॉलोनी
भोपाल - 462 016 (म. प्र.)
फोन : 563380

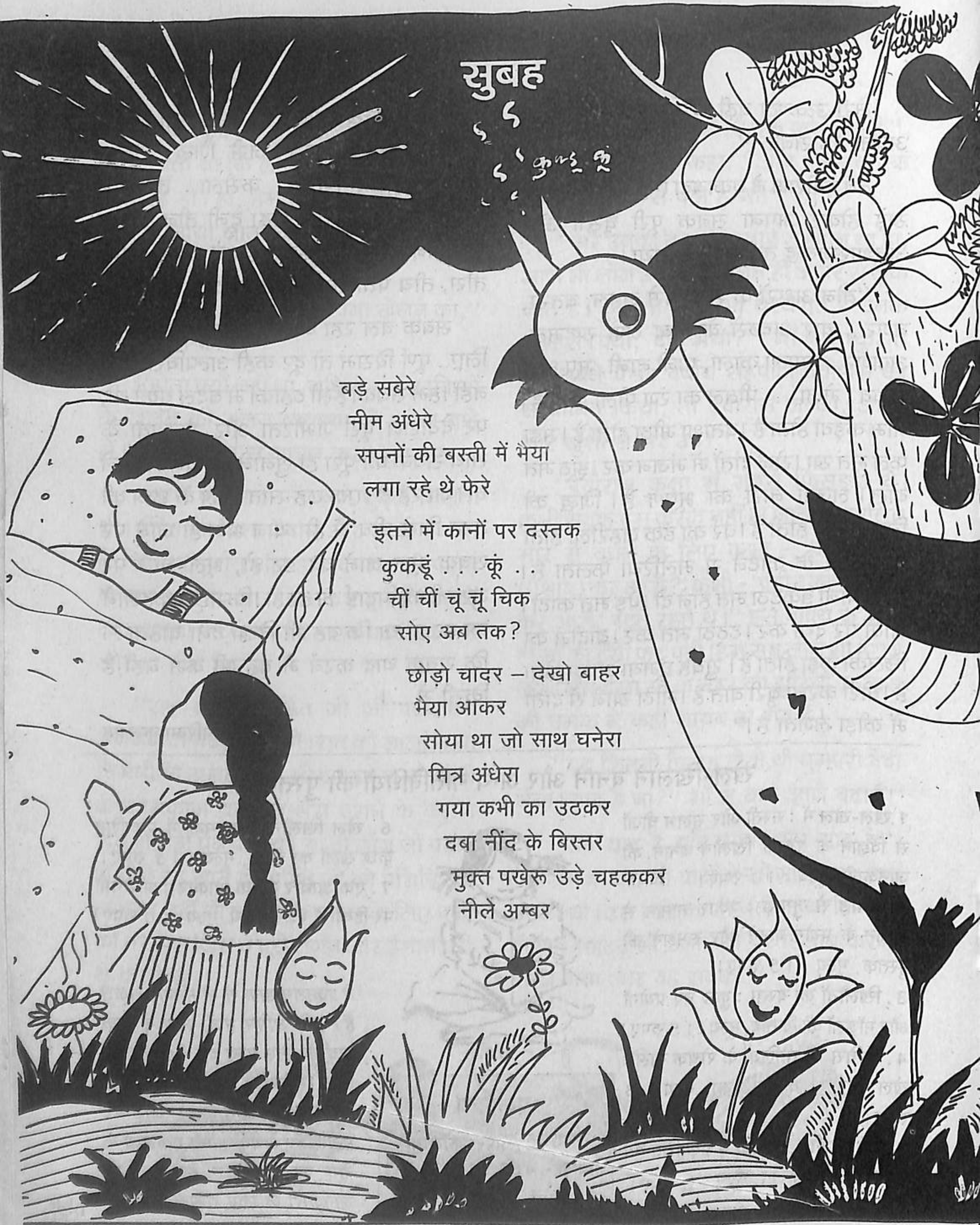

# सुबह

बड़े सबेरे
नीम अंधेरे
सपनों की बस्ती में भैया
लगा रहे थे फेरे

इतने में कानों पर दस्तक
कुकडूं . . . कूं . .
चीं चीं चूं चूं चिक
सोए अब तक?

छोड़ो चादर – देखो बाहर
भैया आकर
सोया था जो साथ घनेरा
मित्र अंधेरा
गया कभी का उठकर
दबा नींद के बिस्तर
मुक्त पखेरू उड़े चहककर
नीले अम्बर

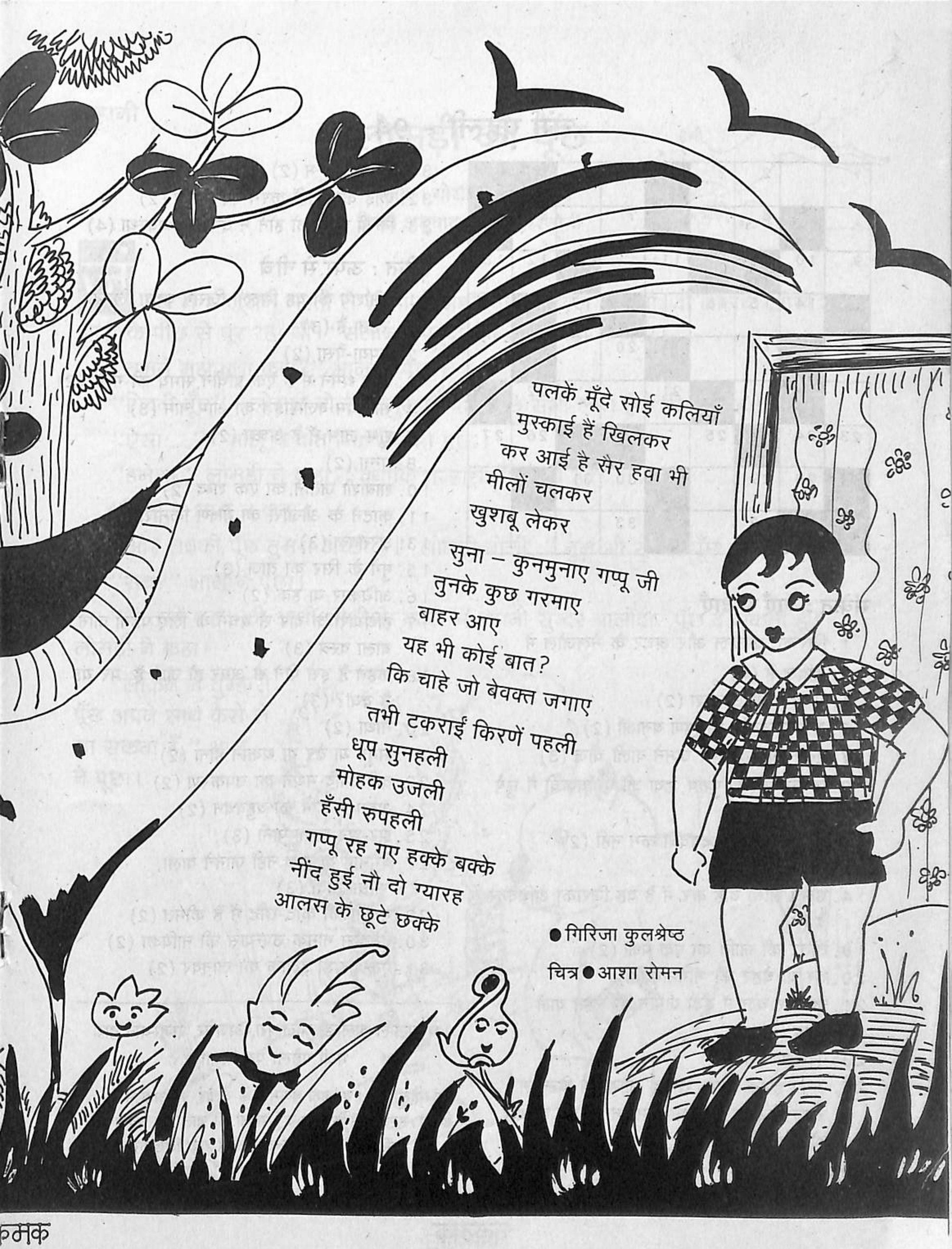

पलकें मूँदे सोई कलियाँ
मुस्काई हैं खिलकर
कर आई है सैर हवा भी
मीलों चलकर
खुशबू लेकर

सुना – कुनमुनाए गप्पू जी
तुनके कुछ गरमाए
बाहर आए
यह भी कोई बात?
कि चाहे जो बेवक्त जगाए

तभी टकराईं किरणें पहली
धूप सुनहली
मोहक उजली
हँसी रुपहली
गप्पू रह गए हक्के बक्के
नींद हुई नौ दो ग्यारह
आलस के छूटे छक्के

● गिरिजा कुलश्रेष्ठ

चित्र ● आशा रोमन

# वर्ग पहेली - 94

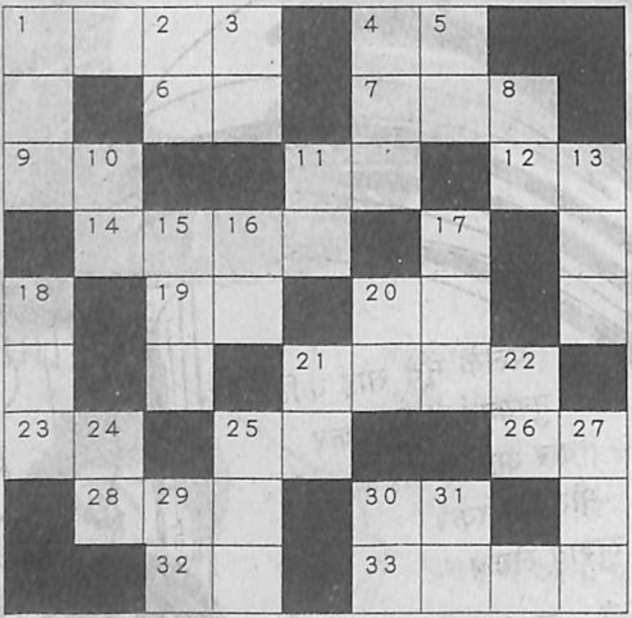


## संकेत : बाएँ से दाएँ

1. सिरकटे काजल और अधर के मेलजोल में बादल है (4)
4. भनक में है आकाश (2)
6. थन पलटकर आभूषण बनाओ (2)
7. पूनम लाई दूध पर जमने वाली चीज़ (3)
9. जवान स्त्री या पुरुष, हवा की पर्यायवाची में छुपे हुए (2)
11. धान कम है पर दबदबा कम नहीं (2)
12. चिट्ठी (2)
14. उल्टा सीधा दाह कर में है वह जिसका अधिकार है (4)
19. तीतर की जाति का एक पक्षी (2)
20. डर या चेहरे की भंगिमाएँ (2)
21. रथ पर चल में ढूँढो ज़मीन पर रहने वाले जीव (4)
23. परत या स्तर (2)
25. अगर इसके आगे 'सफेद' जोड़ो तो बिल्कुल साफ हो जाए पर अगर 'मारना' जोड़ो तो बोर हो जाएँ (2)
26. इशारा (2)
28. घूमने फिरने का रास्ता है दारोमदार में (3)
30. पैर या स्तम्भ (2)
32. कोई काम नहीं करने को कहना (2)
33. किसी चीज़ को होने न देने की व्यवस्था (4)

## संकेत : ऊपर से नीचे

1. गर्भाशय की वह झिल्ली जिसमें बच्चा लिपटा रहता है (3)
2. रुपया-पैसा (2)
3. कार थमने में है एक प्राचीन समय की गाड़ी (2)
4. सोडियम क्लोराइड का आम नाम (3)
5. शुभ-लाभ में है अच्छा (2)
8. गन्ना (2)
10. शाबाशी जताने का एक शब्द (2)
11. काटने के औज़ारों का तीक्ष्ण किनारा (2)
13. अस्तबल (3)
15. मुर्गे के सिर का ताज (3)
16. अधिकार या हक (2)
17. हथियारों के वार से बचने के लिए पहना जाने वाला वस्त्र (3)
18. कहते हैं इसे पीने से अमर हो जाते हैं, पर यह है क्या? (3)
20. माथा (2)
21. समूह या ढेर या थकान होना (2)
22. दही आदि मथने का उपकरण (2)
24. अहम में है मैं का बहुवचन (2)
25. झर-झर बहता पानी (3)
27. बेगुनाह या कुछ नहीं जानने वाला, सीधा-सादा (3)
29. मदारी की काट-छाँट में है कीमत (2)
30. देवदास नामक उपन्यास की नायिका (2)
31. एक पहाड़ी इलाके का जानवर (2)

---

धन्नालाल तालोड़, बालापुरा, अजमेर, राजस्थान द्वारा भेजी पहेली पर आधारित

वर्ग पहेली - 94 का हल चकमक के जुलाई, 99 अंक में छपेगा। हल भेजने के लिए वर्ग पहेली की जाली को चकमक से न काटें। बल्कि संकेतों के नम्बर डालकर शब्द लिखकर भेज दें। सर्वशुद्ध हल भेजने वालों को चकमक का जुलाई, 99 का अंक उपहार में भेजा जाएगा।

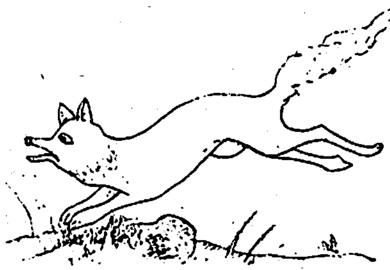

# लोमड़ी की पूँछ

लेखक : योसी अबोलाफ़िआ
हिन्दी अनुवाद : दिनेश रस्तोगी

जंगल में भालूराम मस्ती से शीशी से शहद चाटता टहल रहा था। दो लालची आँखें उसे झाड़ी के पीछे से घूर रहीं थीं। "सलाम। पिद्दी पूँछ," लोमड़ी ने कहा।

"तुमने मुझे क्या कहा?" भालू ने पूछा।

"पिद्दी पूँछ" - लोमड़ी बोली, "तुम्हारे पीठ पीछे सभी लोग ऐसे ही तो कहते हैं।"

"ऐसा.....?" भालू ने दाँत मिसमिसाते पूछा।

"हमेशा," लोमड़ी ने कहा, "क्योंकि तुम्हारी पूँछ नहीं है।"

"है तो," भालू ने कहा।

"और सबकी पूँछ तुमसे अच्छी है।" लोमड़ी बोली, " तुम भी सुन्दर पूँछ ले सकते हो।"

"सच?" भालू ने पूछा।

"मैं तुम्हें शहद की आधी शीशी के बदले में अपनी सुन्दर बालोंदार पूँछ दे सकती हूँ।" लोमड़ी ने कहा।

"लेकिन मैं तुम्हारी पूँछ अपने साथ कैसे ले जा सकता हूँ," भालू ने पूछा।

''तुम्हें ले जाना ज़रूरी नहीं है। मैं तुम्हारे लिए इसे अपने पास ही रखे रहूँगी,'' लोमड़ी बोली। ''तुम तो देख ही रहे हो कि मैंने इसको कितना सम्भालकर रखा हुआ है।''

''लेकिन सबको यह कैसे पता लगेगा कि यह पूँछ मेरी है?'' भालू ने पूछा।

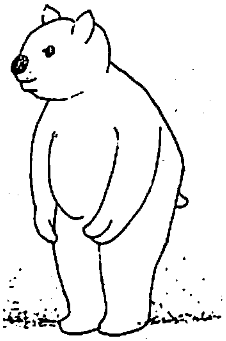

''मैं इस पर एक साइन-बोर्ड लटका दूँगी,'' लोमड़ी ने कहा।

''अगर तुम मेरे इर्द-गिर्द न होगी तो?'' भालू ने पूछा।

''मैं तुम्हें लिखकर दे दूँगी एक घोषणा पत्र - एक वादा। नहीं तो शहद वापस।'' लोमड़ी ने कहा।

**''मैं, लोमड़ी, यह घोषणा करती हूँ कि जो पूँछ मेरे लगी है वह भालू की है।''**

**हस्ताक्षर (लोमड़ी)**

**उधर** नदी के किनारे कुछ जानवर चाय-पानी कर रहे थे और चालाक लोमड़ी की बातें करने में व्यस्त थे।

''मैं एक दिन डाल पर बैठा खाना खा रहा था,'' कौए ने कहा। ''लोमड़ी ठहरी और कहने लगी। 'तुम्हारी जैसी सुन्दर चिड़िया की तो आवाज़ भी बहुत सुरीली होगी।' मैंने गाना सुनाने के लिए जैसे ही मुँह खोला, वैसे ही पनीर का टुकड़ा गिर गया। लोमड़ी ने पनीर उठाया और चल पड़ी। इतना ही नहीं उसने चलते-चलते यह भी कहा कि मैं बेसुरा गाता हूँ।''

खरगोश बोला, ''मेरे पेट में तो अभी भी उन खट्टे अंगूरों के खाने से दर्द हो रहा है जो

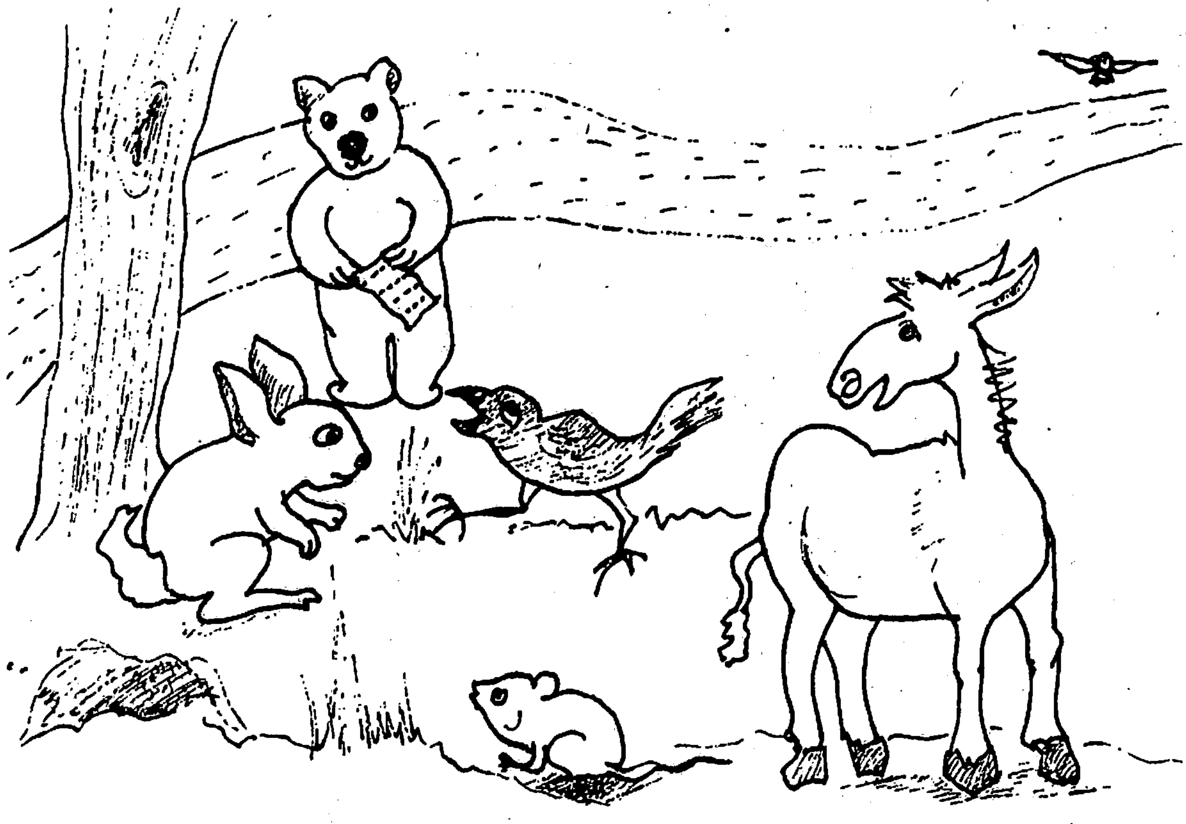

लोमड़ी ने मुझे मेरे मीठे अंगूरों के बदले में दिए थे। उसने मुझसे कहा कि खट्टे अंगूरों में विटामिन बहुत होता है। बहुत फायदे की चीज़ है।''

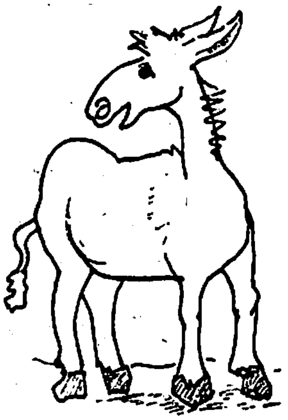

''मैं एक दिन अखरोट बीन रहा था,'' गदहे ने कहा, ''लोमड़ी ठहरी और मदद करने लगी। जब काम पूरा हो गया तो बोली, 'तुम मुझसे बड़े हो इसलिए तुम्हें बड़ा हिस्सा मिलना चाहिए।' उसने मुझे भारी गठरी दे दी। गठरी को जब घर लाकर खोला तो देखा उसमें ढेर सारे पत्थर।''

तभी भालूराम आ पहुँचे। बहुत खुश थे। ''अब तुम लोगों को मेरा मज़ाक उड़ाने की ज़रूरत नहीं है। मेरे भी बहुत सुन्दर पूँछ है।'' भालू ने बड़े रौब से कहा।

''ऐं.... तुम्हारा कौन मज़ाक उड़ाता है? और कैसी पूँछ?'' जानवरों ने पूछा। भालू ने लोमड़ी का लिखा कागज़ दिखाया।

''आपका भी मंडली में स्वागत है।'' गदहे ने कहा, ''उसने तुमसे क्या ठगा?''

''मेरा शहद,'' भालू बोला।

''अब तुम इस कागज़ को अपनी दुम में चिपका लो बड़े भाई और दिखाते घूमो। तुम समझते हो कि लोमड़ी तुम्हें पूँछ देगी?'' खरगोश ने कहा।

''अब लोमड़ी का इलाज करना ही पड़ेगा। उसे सबक सिखाना ही होगा।'' कौए ने कहा।

''पर कैसे?'' भालू ने पूछा।

''बस उसे याद दिलाते रहो कि उसकी पूँछ वास्तव में तुम्हारी है।'' कौए ने राय दी।

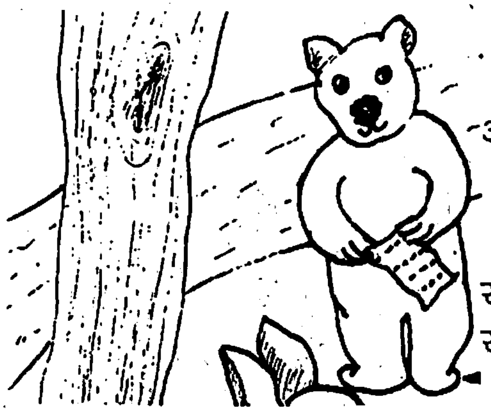

''मैं अभी जाता हूँ।'' भालू बोला।

''ठहरो,'' कौए ने कहा ''हम लोग साथ-साथ चलेंगे, आज रात देर से।''

**आधी** रात थी। लोमड़ी गहरी नींद में अपने घर में सो रही थी। अचानक दरवाज़ा पीटने की आवाज़ आई। ''ऐसी रात में कौन हो सकता है?'' लोमड़ी ने सोचा।

''मैं हूँ,'' भालू बोला। ''मैं अपने दोस्तों को अपनी पूँछ दिखाने लाया हूँ।''

''इतनी रात में,'' लोमड़ी बड़बड़ायी, ''क्या तुम सुबह तक इन्तज़ार नहीं कर सकते हो?''

''अरे ज़रा-सा समय लगेगा।'' भालू बोला।

''ठीक है, ठीक है,'' लोमड़ी बोली, ''जल्दी से देखो और भागो। मुझे बहुत ज़ोरों से नींद आ रही है।''

कौआ बोला, ''अरे यह पूँछ तो बड़ी कबाड़ा हालत में है। इसकी देखरेख तो फौरन करनी होगी।''

"अरे अक्ल से पैदल तुम पूँछ के बारे में क्या जानते हो?" और लोमड़ी ने धमाके से दरवाज़ा बन्द कर दिया।

भालू और उसके दोस्त भालू के घर जाकर सोचने लगे। अब क्या करना होगा?

**कुछ** घण्टों के बाद, सूरज निकलने के ज़रा पहले भालू लोमड़ी के घर वापस पहुँचा। इस बार अकेला था। "मैं अपनी पूँछ की कंघी करने आया हूँ।" उसने कहा।

"क्या?" नींद से भरी लोमड़ी ने कहा, "तुम मुझे ऐसे परेशान नहीं कर सकते। जब मन हुआ चले आए।"

"मैं तुमसे मिलने नहीं आया हूँ।" भालू ने कहा, "मैं तो अपनी पूँछ की देखरेख करने आया हूँ। मुझे आने दो।"

"अच्छा अच्छा," लोमड़ी ने कहा, "लेकिन जो भी करना है जल्दी करो।"

भालू ने कतई समय बरबाद नहीं किया। उसने लोमड़ी को पीढ़े पर बैठाया और काम में लग गया। पूँछ को धोते, निचोड़ते, कंधी करते करते भालू बताता गया कि आगे और क्या क्या करना है। "मैं इन्हें घुँघराले बनाऊँगा, गुलाबी रंगूँगा फिर रिबनों से सजाऊँगा, सुन्दर चिमटियाँ लगाऊँगा। जाड़ों के पहले सोचता हूँ, उस्तरा चलवा दूँ और जाड़ों के लिए इसका तकिया बनवा लूँ।"

"नहीं तुम ऐसा नहीं कर सकते," लोमड़ी ने कहा और पीढ़े से कूदकर खड़ी हो गई।

"यह लो अपना शहद और समझौता ख़त्म।"

"नहीं - ऐसा नहीं हो सकता," भालू ने कहा, "यह तो केवल मूर्ख ही कर सकता है कि आधी शीशी शहद के लिए इतनी खूबसूरत पूँछ को छोड़ दे।"

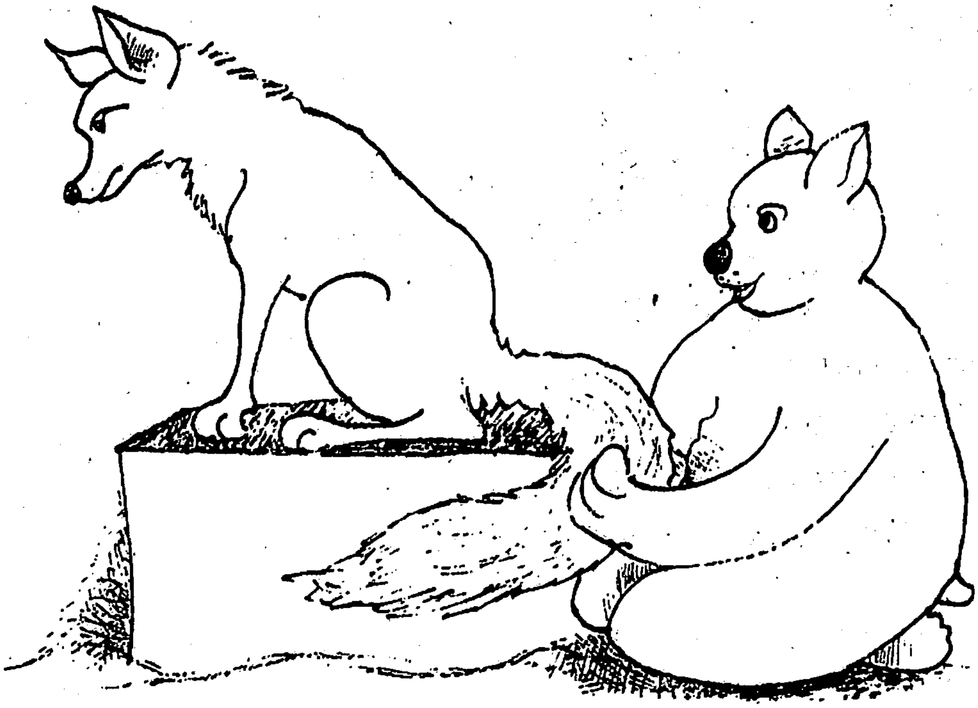

"तुम्हें और क्या चाहिए?" सहमी हुई लोमड़ी ने पूछा।

भालू बोला "मैं शहद तो लूँगा ही पर इसके साथ-साथ पनीर भी चाहिए, अखरोट की गठरी भी और मीठे अंगूर भी।"

"यह तो अजीब बात है," लोमड़ी चिल्लाई।

"नहीं तो मुझे अपनी पूँछ चाहिए अभी," भालू ने कहा।

"ठीक है," लोमड़ी ने कहा, "मैं तुम्हे पूँछ देती हूँ लेकिन तुम्हें बाहर थोड़ी देर इन्तज़ार करना होगा। काफी गम्भीर ऑपरेशन है।"

"दस मिनट का समय दूँगा," भालू ने कहा, "और कोई चालाकी मत खेलना।"

भालू ने बड़ी सब्र से बाहर इन्तज़ार किया। अचानक दर्द की चीखें सुनाई पड़ीं।

कुछ ही मिनट बाद लंगड़ाती हुई लोमड़ी बाहर आई अपनी कमर में बड़ी-सी तौलिया बाँधे हुए। उसके हाथ में पूँछ थी।

"तुमने वाकई में इसे काटा," घबराते हुए भालू बोला।

"यही तो तुम चाहते थे न?" लोमड़ी बोली।

"हाँ," भालू बोला, "लेकिन यह तो अजीब-सी लग रही है। पुरानी झाड़ू जैसी।"

"हूँ ऐसा ही होता है जब पूँछ कट जाती है," लोमड़ी बोली और उसे भालू के पैरों पर फेंक दिया। जैसे ही लोमड़ी घूमी वैसे ही उसकी तौलिया खुल गई। और असली पूँछ आ गई बाहर।

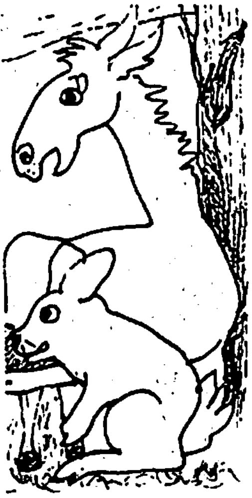

"झूठी कहीं की।" भालू चिल्लाया, "यह झाड़ू है।" और उसने लोमड़ी को उसकी असली पूँछ से पकड़ लिया।

"जो हुआ सो हुआ," लोमड़ी ने माफी माँगते हुए कहा। "मैं तो बस मज़ाक कर रही थी। तुम जो जो कहोगे मैं दूँगी। यहाँ तक कि मैं तुम्हें अपनी पूँछ भी पहनने दूँगी पर केवल एक बार।" लोमड़ी ने कहा।

**नदी** के किनारे भालू के दोस्त उसका इन्तज़ार कर रहे थे। सोच रहे थे कि इतनी देर क्यों हो रही है। इतने में ही भालू दिखाई दिए सुन्दर-सी लोमड़ी की पूँछ लगाए।

"उसने तुम्हें वास्तव में अपनी पूँछ दे दी," अचम्भे से कौए ने कहा।

"और यह सब कैसे किया?" खरगोश ने पूछा।

"तुम सब की मदद से," भालू ने कहा। "चलो अब सब पिकनिक मनाएँ।"

"अच्छा होता अगर लोमड़ी को भी बुलाते।" गदहे ने कहा।

"कोई ज़रूरत नहीं," भालूराम बोले। उसने अपना कोट उतारा और लोमड़ी हाज़िर।

लेकिन लोमड़ी भालू की कमर से फिसलकर बिना कुछ कहे दुम दबाकर ऐसी भागी, ऐसी भागी कि फिर कभी इधर जंगल में नज़र न आई। ●

सभी चित्र : सुधा मेहता

# कठपुतलियाँ बनाओ

## कागज़ के थैले की कठपुतली

किसी कागज़ के थैले को लेकर उसे कपड़े या कागज़ के टुकड़ों से या इसी प्रकार की किसी अन्य रद्दी से भर लो।

कागज़ का थैला बना बनाया न मिले तो पहले कागज़ का थैला ही बना लो। इसके लिए किसी बड़े से अख़बार को मोड़कर चिपका लो। यह तो तुम कर ही लोगे।

थैले में रद्दी भर लेने के बाद उस पर चेहरे की रूपरेखा बना लो। मतलब यह कि आँख, नाक, मुँह किसी रंग से बना लो। तुम ऐसा भी कर सकते हो कि छोटे-छोटे काग़ज़ के टुकड़ों से आँख, नाक और होंठ बनाकर चिपका लो। काग़ज़ के टुकड़े गहरे रंग के होंगे तो कठपुतली ज़्यादा अच्छी लगेगी। (चित्र –1)

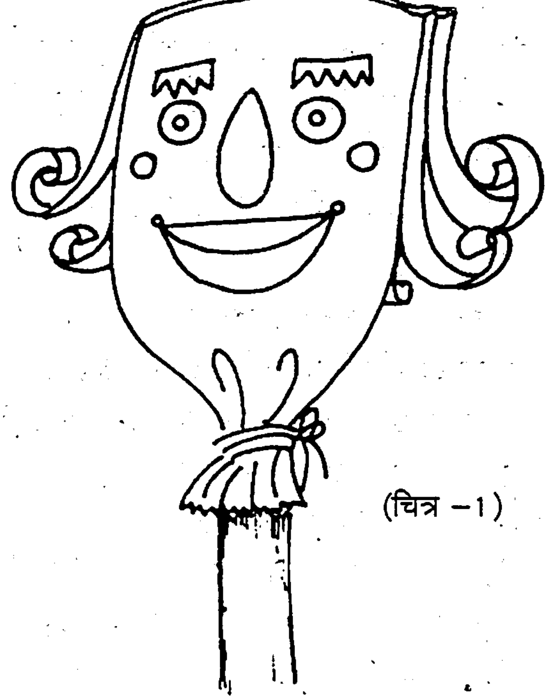

(चित्र –1)

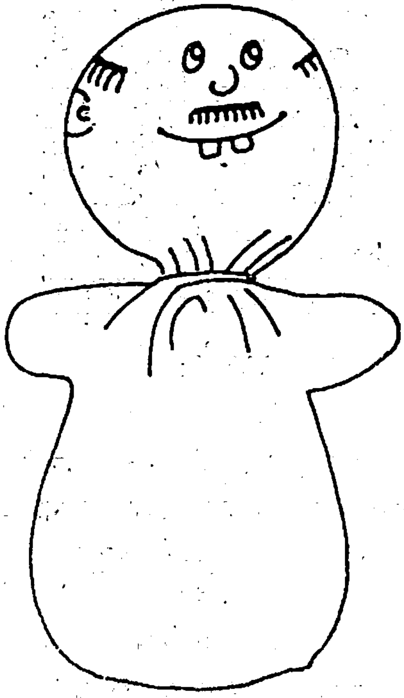

अब थैले में खुले सिरे की तरफ से एक लकड़ी का टुकड़ा डालो। थैले के मुँह और लकड़ी को कसकर बाँध दो। बस कठ्पुतली तैयार है।

## गेंद की पुतली

यह दूसरे तरह की कठपुतली बनाने के लिए किसी पुरानी गेंद को कपड़े के थैले में भर लो। यह कठपुतली का सिर बनेगा। मुँह, नाक और आँख रंगीन पेंसिल से बना लो।

गर्दन बनाने के लिए गेंद में छेद करके लकड़ी का टुकड़ा फँसा दो। इस खड़े लकड़ी के टुकड़े पर एक और लकड़ी का टुकड़ा आड़ा करके बाँध दो।

अब कठपुतली को ऊपर से कपड़े पहना दो। इसके लिए कपड़े की छोटी-सी थैली बना लो। फिर इस थैली में कठपुतली की गर्दन तक का हिस्सा घुसा दो। अब थैली के मुँह को पीछे की ओर ले जाकर बाँध दो।

यह ऐसी कठपुतलियाँ तैयार हो गईं जिनसे कठपुतलियों का खेल भी कर सकते हो और खेल न करना चाहो तो इन्हें घर में यूँ ही सजाकर रख दो।

'बच्चों के लिए खेल क्रियाएँ' से साभार

## हा हा हा !!

नाचीर शुक्ला, राजगुरुनगर, पुणे, महाराष्ट्र

## माथापच्ची : हल अप्रैल, 99 अंक के

1. माँ-बेटी की 12 जोड़ियाँ।
2. 'क'
3. 21वें मिनट में टोकरी आधी भरी होगी।
4. साइकिल 'अ' आगे की ओर चलेगी, साइकिल 'ब' चलेगी ही नहीं जबकि साइकिल 'स' पीछे की ओर चलेगी। पैडल और पिछले चके के बीच काम करने वाली चेन को देखो।
5. 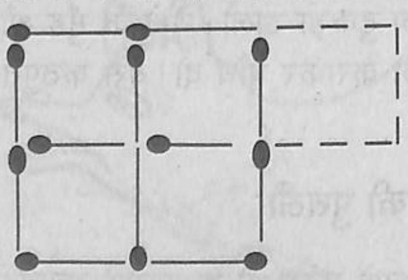
6. रोमन कैलेण्डर में पहले साल की शुरुआत मार्च से होती थी। तब दिसम्बर अपने नाम व गिनती के मुताबिक दसवाँ महीना था। बाद में जूलियस सीज़र के जन्म के महीने, यानी जनवरी को साल का शुरुआत माना जाने लगा। और यही रोमन कैलेण्डर अंतर्राष्ट्रीय कैलेण्डर भी बन गया।
7. 15 मिनट।

## वर्ग पहेली - 92 का हल

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| सु | | म | ल | य | | खं | ज | न |
| ब | हा | ना | | की | प | | ग | |
| ह | | ना | | न | | श | त | क |
| | प | | व | न | जा | | | ह |
| द | ल | द | ल | | पा | नी | पी | ना |
| ली | | | य | व | न | | ला | |
| ल | ल | क | | न | | श | | सै |
| | की | | स्व | स्थ | | ह | म | ला |
| खा | र | क | | ली | ट | र | | ब |

## मुबारक !

वर्ग पहेली – 92

के सर्वशुद्ध हल भेजने वाले पाठक हैं

चम्पालाल कुशवाहा, हिरनखेड़ा, होशंगाबाद व

नेहा सिंगारे, सारणी, बैतूल।

**दोनों म.प्र.**

इन्हें उपहार में

चकमक का मई, 99 अंक भेजा जा रहा है।

● श्रीजा नायर, दूसरी, भोपाल, म. प्र.

## झूले से गिरे

**एक** बार मैं और मेरा मित्र संजय घूमने गए। वहाँ एक झूला लगा था। हम दोनों ने कहा कि चलो हम लोग झूले पर झूलें। तो उसने कहा हाँ। उसने कहा कि पहले मैं झूलूँगा तो मैंने कहा हाँ। तो मैं उसे खूब देर तक झुलाता रहा। फिर मैं झूलने लगा। मैंने कहा कि धीरे से झुलाना। उसने मुझे कुछ देर तक तो धीरे से झुलाया। फिर तेज झूला दिया। मैं डर गया। मैं चीख के साथ गिर पड़ा। मेरे हाथ पैर में चोट आ गई थी। मैं घर आया तो मेरे पापा मम्मी ने मुझे डाँटा।

● अजय जैन, आठवीं, मड़देवरा, छतरपुर, म. प्र.

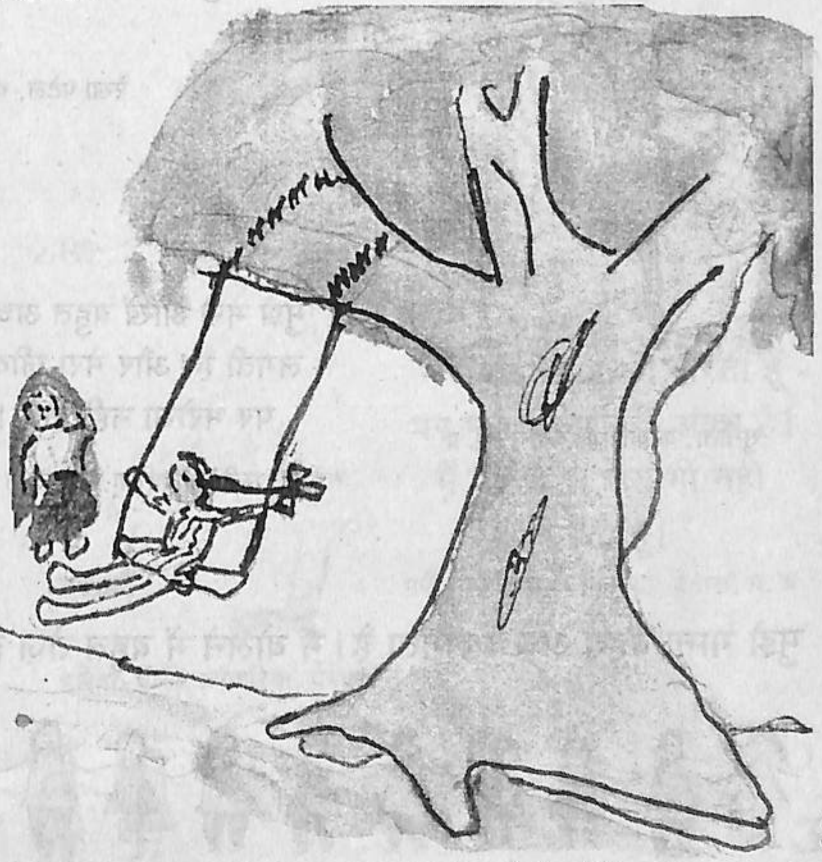

● आकांक्षा बोहरे, चौथी, दतिया, म. प्र.

# हमारी आवाज़ –7

मार्च के महीने में 18 तारीख को देवास ज़िले के एक छोटे से गाँव काँकरिया में एक बालिका मेला हुआ था। वहाँ पहली से लेकर आठवीं तक पढ़ने वाली लड़कियों का एक हॉस्टल है। हॉस्टल से लगा हुआ ही माध्यमिक विद्यालय भी है जिसमें हॉस्टल में रहने वाली लड़कियों के साथ ही गाँव की लड़कियाँ भी पढ़ती हैं। इसी स्कूल में हॉस्टल और गाँव की लड़कियों के साथ किया गया था यह मेला।

मेले में जो नियमित खेल, मौज और गतिविधियाँ होती हैं, उनसे अलग भी इस बार एक खास बात थी। वह यह कि हमें कई लड़कियों के साथ उनके बारे में बात करने का मौका मिला। कि वह क्या सोचती हैं अपने बारे में, क्या चीजें उन्हें पसन्द हैं, उनकी अपनी खूबियाँ क्या हैं, उनमें क्या कोई ऐसी बातें भी हैं जो उन्हें पसन्द नहीं, आदि . . .

हम लोगों ने बातचीत करने के अलावा वहाँ अपना-अपना चित्र भी बनाया। ऐसे ही चित्र नहीं कि जो मन में आए बना दिया। बाकायदा शीशे में अपनी शक्लें देखकर अपने चित्र बनाए थे। तो इस बार पढ़ो कि ये लड़कियाँ अपने बारे में क्या कहना चाह रही हैं और उन्हें उनके चित्रों में भी देखो।

**मुझे दोस्ती करना अच्छा लगता है। और मैं सबसे हिल-मिलकर रहती हूँ। पर मुझे मम्मी स्कूल जाने को कहती है जो मुझे अच्छा नहीं लगता। मैं घर में झगड़ा भी करती हूँ।**

रेखा पटेल, चौथी, काँकरिया, देवास, म. प्र.

सुनीता, काँकरिया, देवास, म. प्र.

**मुझे मेरी आँखें बहुत अच्छी लगती हैं। और मेरा जीवन पर भरोसा नहीं होता।**

संगीता, छठी, काँकरिया, देवास, म. प्र.

मधु सिसोदिया, आठवीं, काँकरिया, देवास, म. प्र.

**मुझे गाना बहुत अच्छा लगता है। मैं बोलने में बहुत तेज़ हूँ। मुझे गुस्सा भी बहुत आता है।**

मुझे मेरी हँसी बहुत अच्छी लगती है। और मेरा गुस्सा भी बहुत ...

सुनीता कुमरे, पाँचवीं, काँकरिया, देवास, म. प्र.

सुनीता, तीसरी, काँकरिया, देवास, म. प्र.

मुझे पढ़ना अच्छा लगता है। और मेरी इच्छा है कि मैं बड़ी होकर डॉक्टर बनकर दूसरों की सेवा करूँ।

सावित्री, चौथी, काँकरिया, देवास, म. प्र.

सरस्वती, सातवीं, काँकरिया, देवास, म. प्र.

सावित्री, चौथी, काँकरिया, देवास, म. प्र.

मुझे तो अपने आप में ही अच्छा लगता है। और मेरे को किसी की बुराई करना अच्छा नहीं लगता।

सावित्री, चौथी, काँकरिया, देवास, म. प्र.

मैं पढ़ाई में अच्छा करती हूँ पर मुझे गाना नहीं आता है। मैं किसी से बात भी नहीं करती हूँ।

पपीता, पाँचवीं, काँकरिया, देयास, म. प्र.

बबीता, चौथी, काँकरिया, देवास, म. प्र.

# माथापच्ची

(1)

8 5 3 2 = 5

**क्या** तुम इस गणितीय समीकरण को गणित के चिन्हों की मदद से पूरा कर सकते हो?

(2)

**प्रोफेसर** साहब फिर एक बार गीयर और चक्कों के चक्कर में पड़ गए हैं। वे सोच रहे हैं कि उन्हीं के बनाए इस तामझाम में ऊपर के चक्के को तीर की दिशा में घुमाने पर सबसे नीचे वाला गीयर किस दिशा में घूमेगा। क्या तुम यह पहेली सुलझाने में उनकी मदद करोगे?

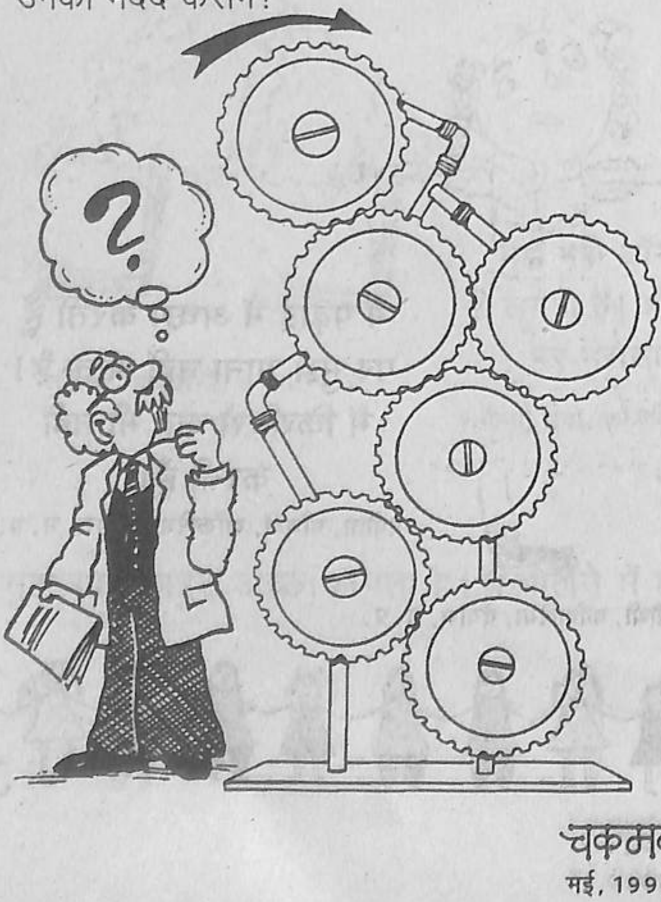

(3)

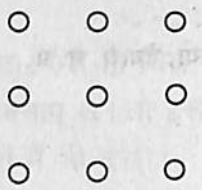

**गोलू** ने रंगोली बनाने के लिए ये बिन्दियाँ बनाईं। बिन्दियाँ बनाकर वह सोचने लगी कि इनसे कितने वर्ग बनाए जा सकते हैं। तुम सोचकर बताओ।

(4)

**मेरे** पास चार सिक्कों में 155 पैसे हैं। समझे न, 1 रूपये 55 पैसे। सोचकर बताओ कि इनमें कितने-कितने पैसों के कितने सिक्के होंगे?

एक रूपये के सिक्के –

आठन्नी –

चवन्नी –

बीस पैसे –

दस पैसे –

अब अगर मेरे पास 270 पैसे हों और सिक्के ऊपर की सूची वाले ही हों, तो बताओ कितने पैसे के कितने-कितने सिक्के होंगे? कुल सिक्के की संख्या चार ही है।

और अगर मेरे पास चार ही सिक्कों में 160 पैसे हुए तो कौन-से सिक्के कितने-कितने होंगे?

(5)

क्या इन दो चित्रों में तुम 5 अन्तर या असमानताएँ ढूँढ सकते हो?

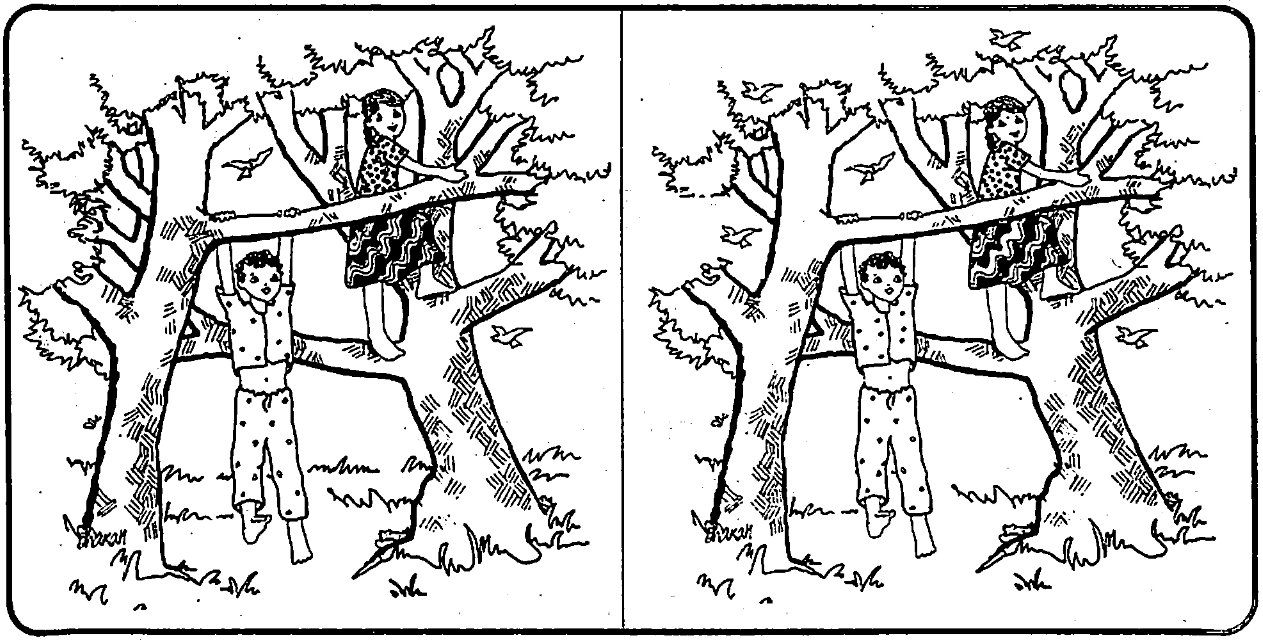

(7)

एक आदमी हरिया की पान की दुकान पर एक पान बनवाता है और उसे एक पाँच रुपए का नोट देता है। हरिया के पास खुल्ले नहीं थे इसलिए वह अपने पड़ोस के चाय-पकौड़ी वाले रामानुज को वह नोट देकर उससे दो-दो रुपए वाले दो व एक रुपए का एक सिक्का ले लेता है। दो रुपए वाले दोनों नोट वह उस पान खरीदने वाले आदमी को लौटा देता है।

थोड़ी देर बाद रामानुज हरिया को बताता है कि वह पाँच का नोट तो नकली है। तब हरिया उसे एक पाँच रुपए का नोट और दे देता है। अब बताओ इस पूरे वाकये में हरिया को कितने पैसों का नुकसान हुआ?

(8)

क्या यह सम्भव है कि तुम अपने सबसे अच्छे दोस्त के पीछे खड़े हो जाओ और तभी वह भी तुम्हारे पीछे खड़ा या खड़ी हो, एक साथ? झट-से सोचकर बताओ।

(6)

**इस** डिब्बे में जो शब्द लिखे हैं उन्हें गौर से सिर्फ एक मिनट तक देखो। फिर इसे ढक दो और एक कोरा कागज़ लेकर डिब्बे के जितने शब्द तुम्हें याद आएँ लिख डालो। देखो, कहीं ताका-झाँकी नहीं करना। अगर तुम्हें आधे से ज़्यादा शब्द याद हों तो तुम्हारी याददाश्त काफी अच्छी है।

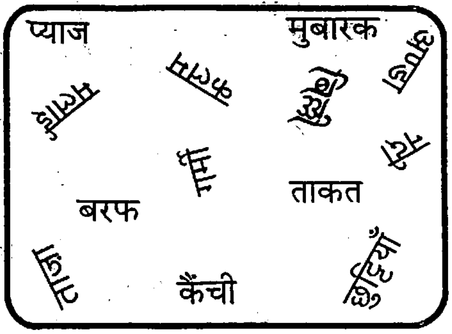

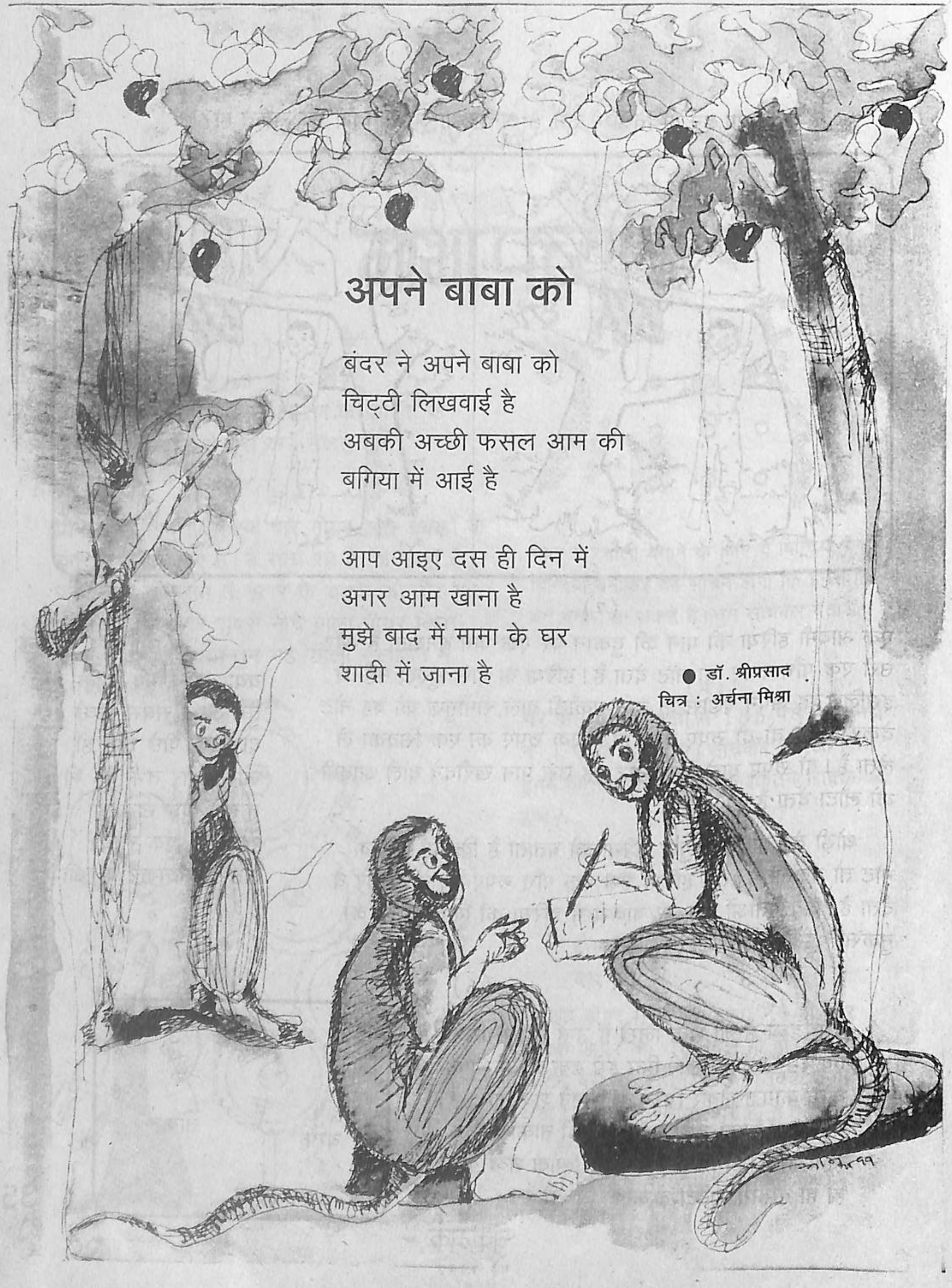

# अपने बाबा को

बंदर ने अपने बाबा को
चिट्ठी लिखवाई है
अबकी अच्छी फसल आम की
बगिया में आई है

आप आइए दस ही दिन में
अगर आम खाना है
मुझे बाद में मामा के घर
शादी में जाना है

● डॉ. श्रीप्रसाद
चित्र : अर्चना मिश्रा

# ब्रश की पुतली

सामग्री : एक पुराना दाँतों का ब्रश, पुराना कपड़ा (किसी पुरानी शर्ट की आस्तीन), कुछ मोती, धागा, दो लकड़ियाँ, रंग आदि।

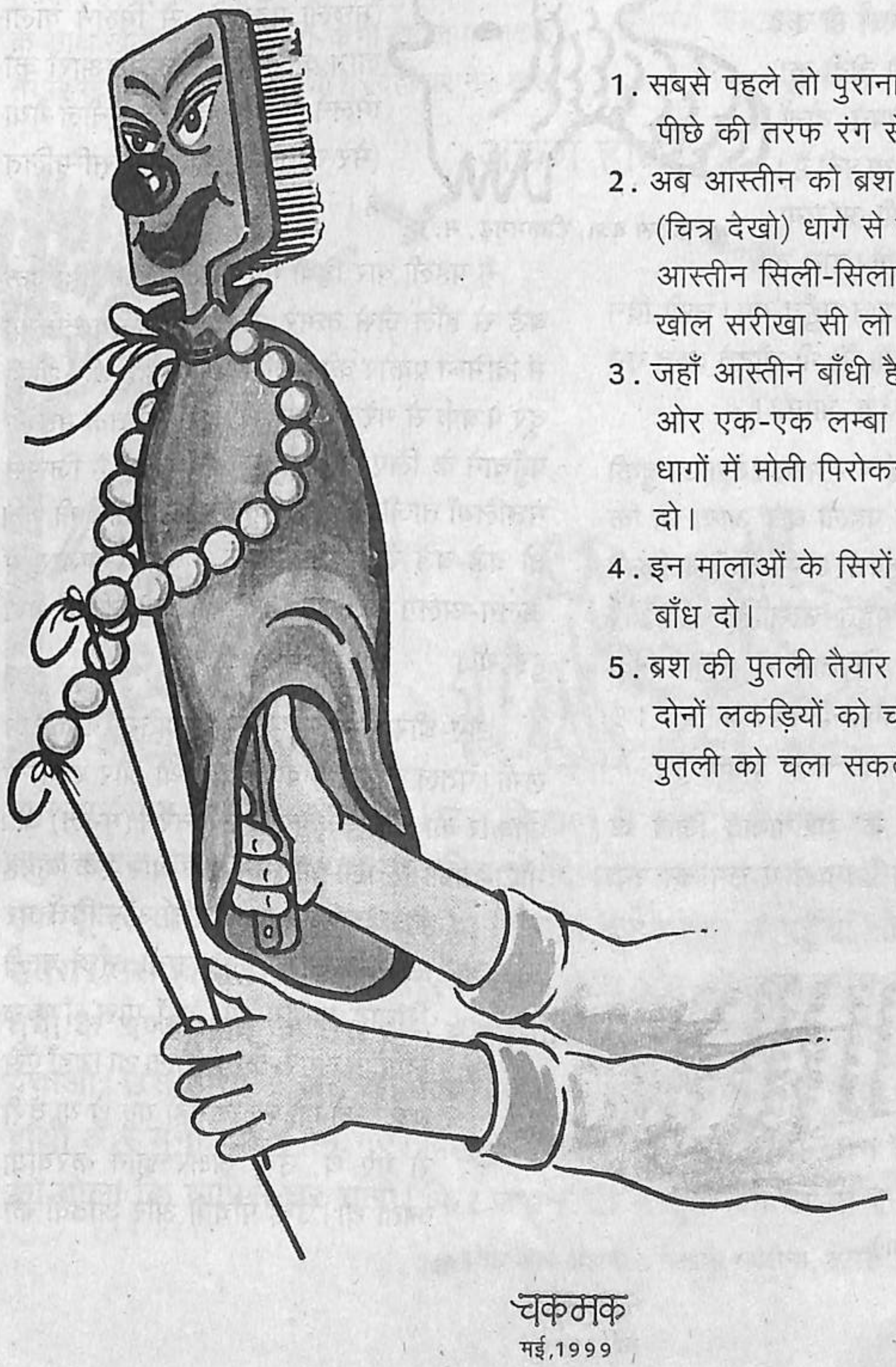

1. सबसे पहले तो पुराना ब्रश लेकर उसके पीछे की तरफ रंग से चेहरा बना लो।
2. अब आस्तीन को ब्रश के ऊपरी हिस्से में (चित्र देखो) धागे से बाँध लो। अगर आस्तीन सिली-सिलाई न हो कपड़े का खोल सरीखा सी लो।
3. जहाँ आस्तीन बाँधी है, यानी गर्दन के दोनों ओर एक-एक लम्बा धागा बाँध लो। इन धागों में मोती पिरोकर, नीचे गठान बाँध दो।
4. इन मालाओं के सिरों पर एक-एक लकड़ी बाँध दो।
5. ब्रश की पुतली तैयार है। मालाओं से बँधी दोनों लकड़ियों को चलाकर तुम इस पुतली को चला सकते हो।

मेरा पन्ना

# ऐसे बिताई हमने गर्मी की छुट्टियाँ

**इस** बार गर्मी की छुट्टियों की शुरुआत से ही हम बड़े दुखी हो गए थे, क्योंकि अम्मा को छुट्टी नहीं मिल रही थी। और ऐसे में कहीं घूमने जाने का सवाल ही नहीं उठता था। इस दुख में हम छुट्टियों में मिला गृहकार्य भी करना भूल गए। दिन ऐसे ही कट रहे थे कि अचानक मेरी दीदी का फोन आया कि वो अपने दोनों बच्चों के साथ बनारस आ रही हैं। और अन्त में वह दिन भी आ गया जब दीदी आने वाली थीं। रात की गाड़ी थी, हम लोग स्टेशन पहुँच गए। उसी दिन तय हुआ कि प्योली (यानी मैं) भी लौटते वक्त उन लोगों के साथ मध्य प्रदेश जाएगी।

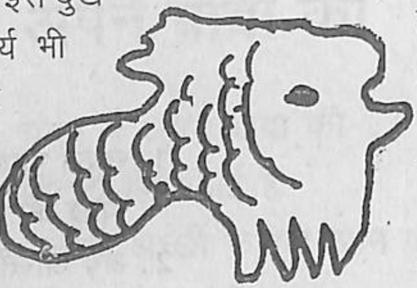

● पारुल बत्रा, टीकमगढ़, म. प्र.

वैसे तो मैं पहले कई बार मध्य प्रदेश जा चुकी थी, लेकिन ऐसा मौका पहली बार आया था कि इतने लम्बे समय (तीन हफ्ते) अम्मा के बिना किसी और जगह काटूँ। मैं बहुत उत्साहित थी और जल्दी-जल्दी गृहकार्य निपटाने में लगी ताकि छुट्टियों में पढ़ाई का बोझ ना रहे। आख़िर 19 मई, सोमवार को हम बनारस से रवाना हुए।

दीदी मध्य प्रदेश के होशंगाबाद ज़िले के केसला गाँव में रहती हैं। वहाँ पे उन का एक संगठन – किसान आदिवासी संगठन है, जो आदिवासियों के हक की लड़ाई लड़ता है। अभी कुछ दिनों से वहाँ के विस्थापित आदिवासियों ने तवा मत्स्य संघ नाम का सहकारी संघ बनाया है जिससे मत्स्याखेटन (मछली पकड़ने) से मिलने वाला लाभ काफी हद तक मछुआरों को मिलने लगा है। दीदी व सुनील भैया (मेरे जीजाजी) भी इसमें सम्मिलित हैं।

मैं पहली बार डिपो गई तो देखा कि वहाँ एक बड़े से हॉल जैसे कमरे में अलग-अलग टंकियों में विभिन्न प्रकार की मछलियाँ पड़ी हुई थीं। थोड़ी दूर पे बर्फ़ से भरे हुए क्रेट थे। दूर-दूर तक मछली पहुँचाने के लिए साथ में बर्फ़ भी रखते हैं जिससे मछलियाँ ताजी रहें। बर्फ़ कूटने की मशीन भी थी। दो बड़े-बड़े तराजू रखे हुए थे और भण्डार में अलग-अलग तरह के जाले और टोकनियाँ भरी हुई थीं।

धीरे-धीरे मैं मछलियों की जातियाँ पहचानने लगी। पतले से शरीर वाली बाम थी और सामान्य आकार की और एक फुट लम्बी नरेन (मृगल) थी। मोटी-ताजी कतला थी (मैंने एक बार एक बारह किलो की कतला देखी) और बित्ते भर से लेके दो दो फुट लम्बी, मूँछों वाली सिंघाड़ पाड़िन थी। वहीं पास में कुछ लोगों ने समर-कैम्प खोला था। वहाँ ऐसे बच्चों को जो स्कूल नहीं गए थे या देरी से गए थे, उन्हें अक्षर ज्ञान करवाया जाता था। उन्हें पाँचवी और आठवीं की

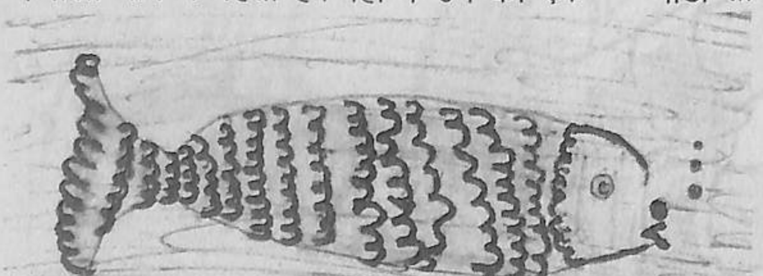

● गोलू (पता नहीं लिखा)

परीक्षा देने के लिए तैयार किया जाता था। साथ ही खेल भी होते थे। एक पुस्तकालय भी था। बच्चे रात को भी वहीं ठहरते थे। मैंने भी आठवीं कक्षा के बच्चों के एक दो काल लिए और एक नया खेल गधा हुलहुल सीखा।

मेरी दीदी का स्वभाव और बड़ों से कुछ हटकर है, वो नए-नए खेल निकालती हैं और बच्चों के साथ खेलती भी हैं। कभी-कभी हम लोग नाटक तैयार करते हैं और खेलते भी हैं। वहाँ पर मैंने कुछ दोस्त भी बनाए। मैं और मेरे भान्जे-भान्जी पास के घर से जाकर आम तोड़ लाते थे। औरजब दीदी बाहर जाती तो आम भून जाती और हम लोग पना बना लेते थे। वहीं मैंने पहली बार धनिया की चटनी पीसी (भले ही उसमें डेढ़ घण्टे लग गए और काफी धनिया साबुत रह गया)। इस तरह काफी अनुभवों का ख़ज़ाना लिए वापस घर लौटे।

● प्योली, तेरह वर्ष, वाराणसी, उ. प्र.

## अच्छा हाथी

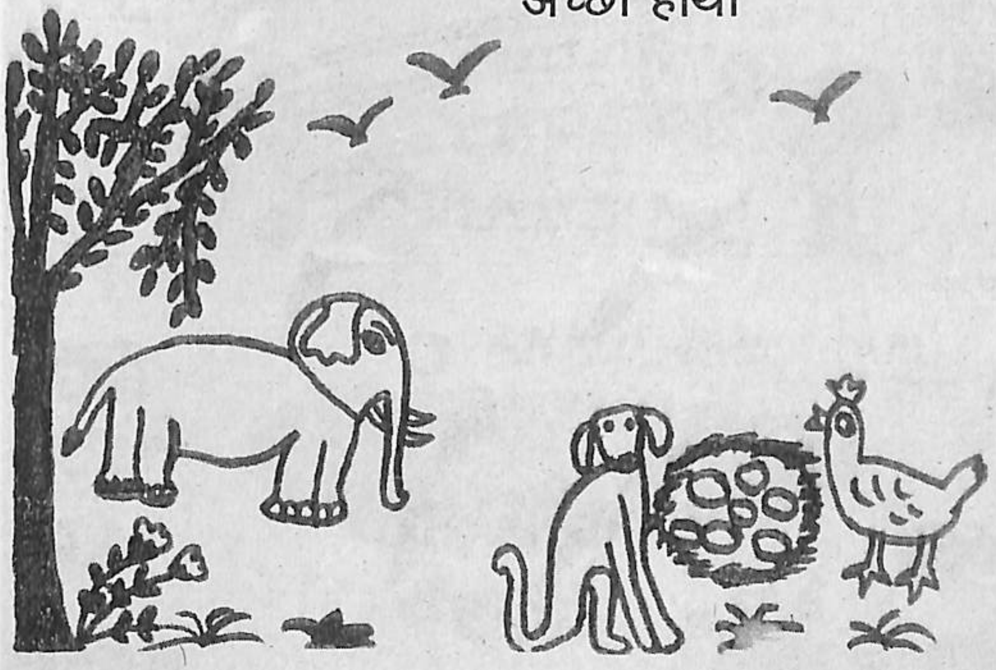

एक बार एक किसान रहता था। उस किसान के पास एक बड़ा सा हाथी था। वो हाथी बहुत मदद करने वाला था। एक दिन वो किसान चल रहा था हाथी के साथ। उसको एक दूसरे खेत में जाना था। जब वो किसान दूसरे खेत में पहुँचा तो वो हाथी पे से उतरा। उस हाथी ने एकदम से एक कुत्ता देखा और वो कुत्ता सोच रहा था कि वो एक मुर्गी के अण्डे खाए जो उस खेत में रहती थी। और वो मुर्गी चिल्ला रही थी – कोई बचाओ। उस हाथी ने कुत्ते को अपनी सूँड से लपेट दिया और फेंक दिया दूर कहीं। वो हाथी और मुर्गी दोस्त बन गए। फिर वो किसान वापिस आया काम करके और हाथी को बोला कि वापिस घर चलो। फिर उस हाथी ने मुर्गी को टा टा कहा और चला गया।

● चित्र और कहानी : सलोनी सक्सैना, दूसरी, गोरेगाँव, मुम्बई, महाराष्ट्र

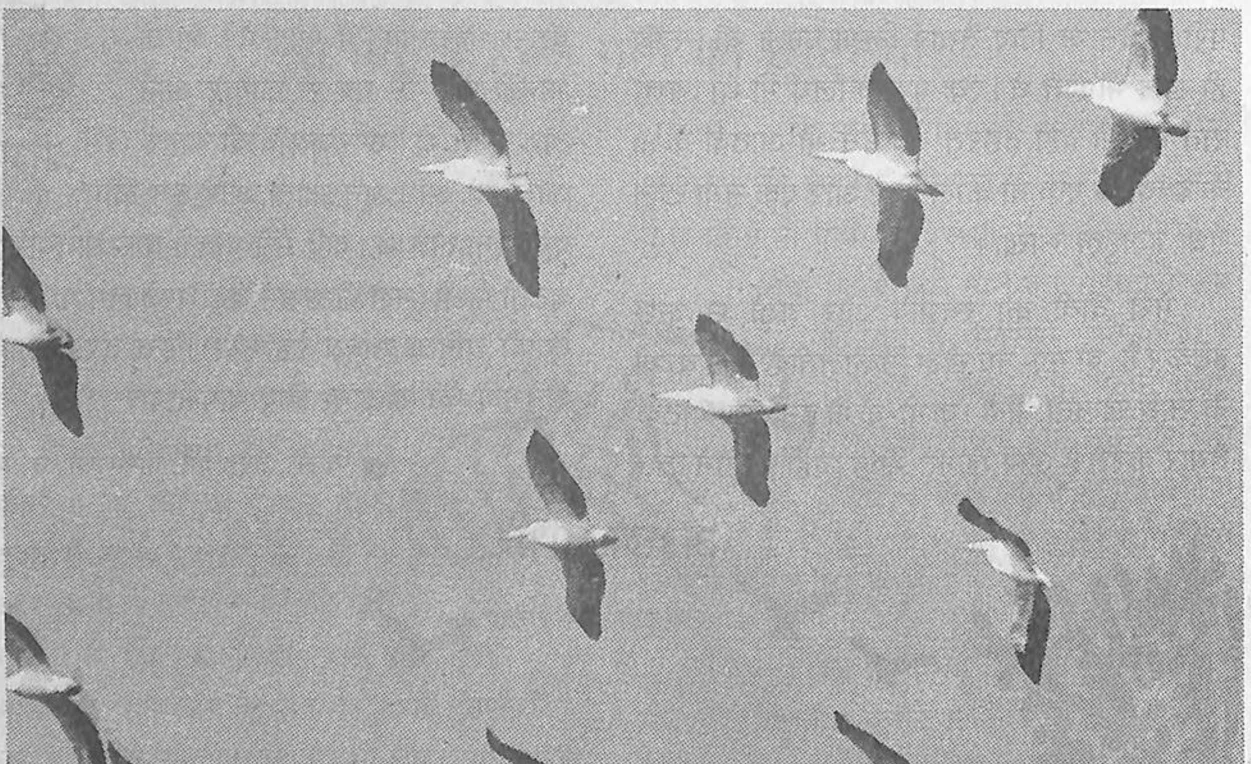

# भारत के आसमान में यही बेड़ा हमसे बड़ा है.

अफसोस कि ये आपको अपनी मंज़िल तक नहीं पहुँचाएँगे। परन्तु इण्डियन एयरलाइन्स पहुँचा सकती है। शुक्र है देश भर में 55 स्थानों और विदशों में 17 स्थानों को जोड़ने वाले 10 एयर बस ए 300, 30 एयर बस ए 320 और 12 बी – 737 हवाई बेड़े का। और रोज़ाना 220 उड़ानों में 37,000 सीटों का। यह सब आपके लिए पेश करती है, एक सचमुच प्रभावशाली व्यवस्था, जो 22000 अनुभवी और पेशेवर कर्मियों से लैस है।

*जैसे अपने ही घर में हों*

इंडियन एयरलाइन्स
Indian Airlines

BatesClarion 4F0E05

रजत शर्मा, तीसरी, उज्जैन, म.प्र.

अंकुर लाल, तीसरी, छतरपुर, म.प्र.

चकमक पंजीयन क्रमांक 50309/85 के अन्तर्गत भारत के समाचार पत्रों के रजिस्ट्रार द्वारा पंजीकृत। डाक पंजीयन क्रमांक MP-2/P-431/99

रीतिका श्रीवास्तव, नई दिल्ली

रेक्स डी रोज़ारियो की ओर से विनोद रायना द्वारा राजकमल ऑफसेट प्रिन्टर्स, भोपाल से मुद्रित एवं एकलव्य, ई-1/25, अरेरा कालोनी, भोपाल 462 016 से प्रकाशित।
संपादक : विनोद रायना